।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2013-16
दयानन्दाब्द १९१,
सृष्टि सं.-१९६०८५३१९५

वर्ष-13 / अंक-21 / फाल्गुन कृ. 12 से फाल्गुन शु. 10 सं. 2071 वि. / 16 से 28 फरवरी 2015 / अमरोहा (उ.प्र.) / पृ.- 12 / प्रति- 5/-

विद्यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर अभिवादन स्वीकार करते आर्यरत्न महाशय धर्मपाल- केसरी

धूमधाम से मनाया एमडीएच स्कूल का वार्षिकोत्सव

नंदिनी बिदालिया
दिल्ली।

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी एमडीएच इंटरनेशनल स्कूल, द्वारका का वार्षिकोत्सव वायु सेना सभागार दिल्ली कैंट में रंगारंग कार्यक्रम "मेरा देश रंगीला" के साथ संपन्न हुआ। महाशय धर्मपाल जी के करकमलों द्वारा तिरंगा झंडा फहराने व विशाल सुसज्जित हॉल में दीप प्रज्वलन के साथ प्रारंभ हुआ। मुख्य अतिथि आत्मशुद्धि केन्द्र आर्य समाज बहादुरगढ़ के संरक्षक स्वामी धर्ममुनि ने अभिभावकों तथा अतिथिगणों को प्रेरणादायी उद्बोधन किया। सांसद प्रवेश वर्मा व उपशिक्षा निर्देशक कमलेश कुमारी चौहान ने संबोधित किया। महाशय जी के 92 वर्ष के प्रेरणादायी जीवन के उल्लेखनीय धार्मिक, सामाजिक व शैक्षिक कार्यों का स्वागत हर्षध्वनि व ताली बजाकर किया गया । विशिष्ट अतिथिगणों में आर०एन०रा, ओबरॉय जी, राजेन्द्र कुमार, महाशय जी की तीन सुपुत्रियाँ द्वारा विद्यालय की प्रधानाचार्या नंदिनी व सुभाष नगर स्कूल की प्रधानाचार्या शकुंतला तनेजा व महाशय जी की पुत्रवधु ज्योति गुलाटी भी कार्यक्रम में उपस्थित रहीं। बच्चों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतिकरण, गणेश वंदना, कव्वाली, भंगड़ा-गिद्दा, संस्कृत व बंगला गीत के साथ, सुभाष चन्द्र बोस की नाटिका, गंगा अवतरण नाटिका के साथ-साथ विशेष उल्लेखनीय रहा। समस्त अतिथियों को शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया गया। स्वामी दयानन्द की जीवनी पुस्तक भेंट की गई। विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति ट्रॉफी देने के साथ-साथ स्वामी दयानन्द जी सचित्र पुस्तकें दी गईं। प्रधानाचार्या सहित समस्त अध्यापिकाओं ने भी मंच पर सुन्दर गीत प्रस्तुत किया। बच्चों की ड्रिल योगासन व पिरामिड आकर्षण का केंद्र रहा , समस्त बच्चों को पुरस्कार वितरण अतिथियों का स्वागत व आभार ज्ञापन विद्यालय की प्रधानाचार्या एम० मोरिस व व्यवस्थापक गोविंद राम अग्रवाल ने किया।

इस अवसर पर पूज्य महाशय जी द्वारा विद्यालय वार्षिक पत्रिका "अनुभूति" का विमोचन किया गया। आर्यसमाज परिवार की संयोजिका सरोज यादव व वीना आर्य का भी मंच पर अभिनंदन किया गया।

वैदिक संस्कृति को पुनः स्थापित करने को प्रयासरत् है आर्य समाज : विनय

दिल्ली। हर वर्ष की भांति दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से विश्व पुस्तक मेले में स्टाल लगाया गया है, जिसमें न्यूनतम मूल्यों पर वैदिक साहित्य जनमानस के लिए उपलब्ध कराया गया, दिल्ली सभा के महामन्त्री विनय आर्य ने बताया कि आर्यसमाज एक ऐसा आन्दोलन है जो भारत की वैदिक संस्कृति को पुनः स्थापित करने में सतत् प्रयासरत् है। आर्य समाज की हर वर्ष इस पुस्तक में सहभागिता होती है। इस वर्ष भी सभा द्वारा अंग्रेजी साहित्य तथा हिन्दी साहित्य के लिए स्टाल बुक किये गये हैं। हमारा उद्देश्य वैदिक साहित्य को हजारों पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास रहता है जिससे वे विचारों की पूंजी को ग्रहण कर लांभावित हो सकें। हमारा लक्ष्य ऐसे व्यक्ति जो आर्य समाज स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा वैदिक साहित्य से अनजान होता है या बहुत कम जानकारी होती है। उस प्रत्येक व्यक्ति तक हम विश्व पुस्तक के मामले से जानकारी पहुँचाना है। महर्षि दयानन्द द्वारा कृत सत्यार्थ प्रकाश मात्र 10 रूपये में जनता के लिए उपलब्ध कराया गया । इसके अतिरिक्त वेद हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध हैं। दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा का हिन्दी साहित्य स्टाल हॉल न. 1 2 स्टाल न. 219, 225 पर उपलब्ध है। तथा अंग्रेजी साहित्य का हॉल न. 1 । स्टाल 379 पर उपलब्ध है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जिन ग्रन्थों का आर्ष कहा है वे सब आर्य समाज की साहित्यिक धरोहर हैं इस साहित्य की उपयोगिता एवं महत्व के विषय में आज युवा पीढ़ी को जानना चाहिए। विश्व पुस्तक मेले के माध्यम से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा इस कार्य में संलग्न है। ताकि युवा पीढ़ी भारतीय संस्कृति के विषय में अधिकाधिक जान सकें। युवा में उठे हर प्रश्न का उत्तर महर्षि दयानन्द की अनमोल कृति सत्यार्थप्रकाश में उपलब्ध है। इस पुस्तक मेले में आर्य समाज के स्वर्णिम सूत्र जैसे पत्रक निःशुल्क भी वितरित किये गये। अतः सभी पाठकों ने विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर आर्य समाज व वैदिक साहित्य का विशेष लाभ उठायें।

आगामी अंक में पढ़ें- ◆ गांधीधाम : हीरक जयन्ती ◆ बरनावा विशेषांक ◆ टंकारा विशेषांक

सैनिकों की मूलभूत चीज़ों में कमी चिन्ता का विषय : आर्य

डॉ. ब्रजेश चौहान
अमरोहा

अमरोहा। भारतीय सैनिकों के लिए मूलभूत चीज़ों की कमी का होना गहरी चिन्ता का विषय है। यह विचार यहां आर्यावर्त कॉलोनी में वेद प्रचार मण्डल की बैठक में अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार आर्य ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि संसद में उत्तराखण्ड के पूर्व मंत्री व मेजर जनरल भुवन चन्द्र खंडूरी की अध्यक्षता वाली 18 सदस्यीय संसदीय समिति ने बुलेट प्रूफ जैकेट की खरीद की कवायद पर भी सवालिया निशान लगाए। समिति ने इस बात पर भी गहरी चिन्ता जताई है कि इसमें ढिलाई बरतकर सरकार हजारों सैनिकों की जान व राष्ट्र की अस्मिता खतरे में डाल रही है।

अध्यक्ष श्री आर्य ने बताया कि 12 से 18 फरवरी तक मण्डल भर से आर्यों का जत्था महर्षि दयानन्द के जन्मभूमि टंकारा की यात्रा पर रवाना होगा। बैठक में 28 जनवरी को लाला लाजपत राय की जयंती जनपद स्तर पर मनाने का प्रस्ताव पारित किया गया। पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की पूर्ण तिथि पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी गयी।

इस अवसर पर हरीश चन्द्र आर्य, मंगू सिंह आर्य, रमेश चन्द्र आर्य, शकुन्तला आर्या, डॉ. बीना रुस्तगी, हरिओम अग्रवाल, एन.के. गर्ग, यादराम सिंह आर्य, श्रीराम गुप्ता, सतीश आर्य, आर्यमुनि वानप्रस्थ, लेखराम सैनी, रोहताश सिंह, हरिओम अग्रवाल, देवेन्द्र आर्य, सुमित अग्रवाल, सुरेश आर्य, शिवचरन सिंह आर्य, कृष्णा चन्द्र आर्य, श्री कृष्ण चन्द गोयल, सम्मान मुनि, स्वामी मुक्तानन्द आदि सहित भारी संख्या में जनपद भर से पधारे आर्य प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बैठक में पारित सर्वसम्मत प्रस्ताव में कहा गया कि आज-कल पिज़्ज़ा खाने से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। गूगल सर्च में देखने से स्पष्ट पता लगता है कि पिज़्ज़ा आदि अमेरिकी खाद्य पदार्थों में गाय, सूअर, बकरा आदि का मीट तथा घातक एल्कोहल कैमिकल आदि का प्रयोग किया जा रहा है। बैठक में पारित प्रस्ताव की प्रतिलिपि भारत के प्रधानमंत्री, गृह मंत्री व मुख्य मंत्री सहित प्रशासन को भेजी गयी हैं। बैठक में मास नवम्बर, दिसम्बर 2014 की प्रचार आख्या प्रस्तुत की गयी तथा विभिन्न समसामयिक प्रकाशन सदन के पटल पर प्रस्तुत किये गये। बैठक का प्रारम्भ राष्ट्र कल्याण यज्ञ के साथ हुआ जिसमें विश्व में शान्ति सद्भाव की कामना सहित पर्यावरण संरक्षण, राष्ट्र समृद्धि तथा कल्याण की प्रार्थना की गयी। बैठक की अध्यक्षता वेदप्रचार मण्डल के अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार आर्य ने की तथा संचालन मंगू सिंह आर्य ने किया।

आर्यसमाज रामनगर में नेताजी के जन्म दिवस पर उत्सव

तेलपाल सिंह आर्य
रुड़की।

आर्य समाज रामनगर, रुड़की (हरिद्वार) ने देश के महानद स्वतंत्रता सेनानी सुभाष चन्द्र बोस के जन्मदिवस पर स्वास्तिक महायज्ञ किया गया। यज्ञ की मुख्य यजमान उषा रानी वर्मा, ब्रह्मा मदनपाल शर्मा व कार्यक्रम के मुख्य संयोजक तेजपाल सिंह आर्य रहे। रामेश्वर प्रसाद सैनी (मंत्री) ने सुभाष चन्द्र बोस के जीवन चरित्र व जीवन की विशेष घटनाओं पर भी प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में विनोद कुमार सैनी रतन सिंह आर्य, ज्ञानसिंह सैनी, प्रकाश चन्द्र सैनी, वेद प्रकाश सैनी, महावीर, विजय हान्डा, आभा शर्मा, पुष्पा मदान, डॉ0 आलोक कुमार, राम अवतार यादव, प्रान्तीय प्रतिनिधि आदि उपस्थित रहे।

आर्यसमाज बिहारीपुर का 132वां वार्षिकोत्सव

डॉ0 श्वेतकेतु शर्मा
बरेली।

आर्य समाज बिहारीपुर, बरेली का 132वां वार्षिकोत्सव एवं ऋषि बोधोत्सव आर्य समाज बिहारीपुर, महर्षि दयानन्द चौक, गली आर्य समाज बरेली में 15 से 21 फरवरी तक धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर 17 फरवरी को शोभायात्रा भी निकाली जाएगी। कार्यक्रम में स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती वेदभिक्षु, बरेली; आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, दिल्ली; आचार्य विष्णुदत्त, साहिबाबाद; डॉ0 पवित्रा, आचार्या-कन्या गुरुकुल, सासनी; भानुप्रकाश आर्य, बरेली; यशदेव आर्य, आंवला विद्वान पधार रहे हैं व आर्य कन्या कुरुकुल, सासनी, हाथरस की ब्रह्मचारिणियों द्वारा वेदपाठ किया जाएगा।

सोत नदी को पुनर्जीवित करने की कवायद लटकी

अमरोहा। बाढ़खण्ड अफसरों की उदासीनता के चलते सोत नदी को पुनर्जीवित करने की कवायद परवान चढ़ने से पहले ही अधर में लटक गयी है। क्योंकि विभागीय अफसरों ने प्रशासन के आदेश के बावजूद खुदाई पर आने वाले खर्चे का एस्टीमेट तैयार नहीं किया है। डीएम ने विभागीय अफसरों को अन्तिम मोहलत देते हुए एक सप्ताह के अन्दर एस्टीमेट तैयार करने के कड़े निर्देश जारी किये हैं।

महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारन्टी अधिनियम के तहत सोत नदी को दोबारा जीवित करने की मुहिम चलायी गयी है। नदी किस क्षेत्र में बहती थी, इसका सर्वे कराया

गया है। स्थानों को चिन्हित कर लिया गया है। चिन्हित स्थानों की खुदाई कराई जानी थी। बाढ खण्ड विभाग से खुदाई पर आने वाले खर्चों का एस्टीमेट मांगा गया था। आदेश दिए हुए को करीब दो माह से अधिक समय बीत गया है। लेकिन, अभी तक एस्टीमेट तैयार नहीं किया गया है। बाढ़खण्ड अफसरों की उदासीनता के कारण नदी खुदाई का कार्य अधर में लटक गया है।

मनरेगा उपायुक्त बलराम कुमार ने बताया कि अभी तक बाढ़खण्ड विभाग द्वारा एस्टीमेट नहीं सौंपा गया है। जिलाधिकारी के आदेश पर विभाग से तत्काल खुदाई का एस्टीमेट मांगा गया है। (साभार : अमर उजाला 3.2.14)

गुरुकुल हरिपुर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

हरिपुर, ओड़िसा (दिलीप कुमार जिज्ञासु)। गुरुकुल हरिपुर, जुनवानी का पंचम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वार्षिकोत्सव 30 जनवरी से 1 फरवरी तक देश के शीर्षस्थ विद्वानों, साधु-संतों, सद्गृहस्थियों आर्यजनों की पावन उपस्थिति में अनेक महत्वपूर्ण प्रेरक एवं ऐतिहासिक कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न हुआ, जिसमें समाज, गृहस्थ, देश, अध्यात्म से संबन्धित विभिन्न विषयों पर सारगर्भित उपदेश हुए।

गढ़ में हुआ चतुर्वेद पारायण

प्रतिनिधि
पूठ (पुष्पावती) गढ़मुक्तेश्वर।

गुरुकुल महाविद्यालय, पूठ में 24-25 दिसम्बर को चतुर्वेदशतक पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया। गुरुकुल पूठ के संचालक स्वामी धर्मेश्वरानन्द आचार्य के जन्मोत्सव पर गुरुकुल में 24 दिसम्बर से एक विशेष वृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसकी पूर्णाहुति 25 दिसम्बर को प्रात: 10 बजे हुई।

मंगूसिंह मण्डल निरीक्षक नियुक्त

कार्यालय प्रतिनिधि
अमरोहा।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश ने आर्यसमाज रामपुर सफेद (अमरोहा) के प्रधान मंगूसिंह आर्य को विज्ञप्ति जारी कर मुरादाबाद मण्डल में कार्यरत् आर्य समाजों की निरीक्षण हेतु निरीक्षक नियुक्त किया है।

वृक्ष लगाएं पर्यावरण बचाएं

अस्मा इदुत्वाष्टा तक्षद्वज्रं स्वपस्तमं स्वर्यं रजाय।
वृत्रस्य चिद्विदयेन मर्य तुजन्नीशानस्तुजता कियेधा:॥
-ऋग्वेद 1.61.6

प्रस्तुत वेदमंत्र में क्रियाशीलता रूप वज्र से वासनाओं का विनष्ट कर, जीवन को स्वर्ग बनाने की प्रेरणा की गयी है। परमात्मा ने वासना रूप शत्रुओं पर आक्रमण करने के लिए कार्य रूपी वज्र दिया है। अन्त:करण में दैवीय वृत्ति और आसुरी वृत्ति में चल रहे संग्राम में आसुरी वृत्तियों की पराजय इसी वज्र से होती है। काम, क्रोध, लोभ ने इन्द्रियों, मन, बुद्धि में जो किले बनाए हुए हैं, वे इसी वज्र से नष्ट हो जाते हैं। इससे मनुष्य का जीवन ज्ञानयुक्त और यशस्वी होता है।

हम निरंतर क्रियाशील रहकर वासनाओं रूपी शत्रुओं का संहार कर, जीवन को स्वर्ग अर्थात् सुखमय बनाएं।

आलस्य मनुष्य का महान शत्रु है।

: सूचना :
आर्य अभिनन्दन

आर्यसमाज के उपदेशक एवं भजनोपदेशक, जिनकी आयु 60 वर्ष अथवा उससे अधिक हो गयी है, हम उन सबका इसी वर्ष में अभिनन्दन करेंगे।

आप अपना फोटो, कार्यक्षेत्र, तथा अन्य सूचना भेजें। एक पुस्तिका भी छापी जाएंगी।

पत्र व सूचना देने का पता :

ठाकुर विक्रम सिंह
ए-41 द्वितीय तल, लाजपतनगर-सेकेंड
निकट लाजपतनगर मैट्रो स्टेशन
नई दिल्ली- 110024

भारत के प्रथम राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत एक समाजसेवी की पुकार

महामहिम ओबामा (राष्ट्रपति, अमेरिका) एवं माननीय नरेन्द्र मोदी जी (प्रधानमंत्री, भारत)!

आज सम्पूर्ण विश्व आतंकवाद की महामारी से पीड़ित है। भारत के निकट पांच देशों को आतंकवाद से सबसे अधिक पीड़ित होना पड़ रहा है। मैं आप दोनों महानुभावों को राष्ट्रमण्डलीय देशों की तरह नेपाल, श्रीलंका, बांग्लादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान और भारत गणराज्य मिलकर संयुक्त राष्ट्र महासभा में एक प्रस्ताव पारित कराएं, और गणराज्य मण्डल देश महासंघ नाम से एक महासंघ बनाएं तथा आतंकवाद का सब साथ मिलकर मुकाबला करें। इस गणराज्य मण्डल की अध्यक्षता भारत गणराज्य करे।

भारत के प्रधानमंत्री महोदय!

भारत माता के अमर सपूत भारत के स्वतंत्रता संग्राम की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व निछावर करने वाले अमर सेनानी स्व0 सुभाष चन्द्र बोस को अब तक भारत रत्न क्यों नहीं दिया गया?

वैद्य डॉ0 महेन्द्र बहादुर सक्सैना
चन्द्रा कुंवर डॉ0 कुसम 'स्मृति' आयुर्वेद चिकित्सा अनुसंधान एवं शोध संस्थान
मौ0- कानून गोयान, सांई मंदिर के निकट
बड़ा घर, अमरोहा

आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

- शिविर में लिया 40 कन्याओं ने भाग
- आसन-प्राणायाम के साथ सिखाए कुंग-फू कराटे भी

धर्मधर आर्य
मुम्बई।

आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई के तत्वावधान में आर्यवीर दल मुम्बई द्वारा आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर आर्यसमाज सान्ताक्रुज के प्रांगण में भव्यतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

शिविर का प्रारम्भ अरुणा परेश पटेल, रजनी रवि सिंह एवं लालचन्द आर्य उपप्रधान आर्यसमाज सान्ताक्रुज के कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण के साथ हुआ।

शिविर में शारीरिक पाठ्यक्रम का संचालन द्रोणस्थली तपोवन, देहरादून से आई सुव्रती आर्या, वीणा चतुर्वेदी, पाणिनी कन्या गुरुकुल, वाराणसी एवं अंजलि गोस्वामी एवं सौरभ सिंह, मुम्बई ने किया। यह शिविर आर्य समाज सान्ताक्रुज के महामंत्री संगीत शर्मा, आर्य वीरदल के संचालक पं0 नरेन्द्र शास्त्री तथा मंत्री पं0 धर्मधर आर्य के नेतृत्व एवं सतीश गोस्वामी व ज्ञानप्रकाश आर्य के अथक पुरुषार्थ से सम्पन्न हुआ। जयाबेन पटेल संचालिका- आर्य वीर दल मुम्बई, संयोजिका सुदक्षिणा शास्त्री, सरोज गुप्ता एवं सुनीता शास्त्री के सहयोग से महिलाओं की पूरी टीम ने शिविर में समस्त भोजनादि की व्यवस्था को सुचारू रूप से पूर्ण किया। आर्य वीर दल के बौद्धिकाध्यक्ष ब्र0 अुरुण कुमार 'आर्यवीर' ने शिविर में बौद्धिक प्रशिक्षण के रूप में सेवाएं दीं।

शिविर में लगभग 40 कन्याओं ने भाग लिया। इन वीरांगनाओं को कनिष्ठ एवं वरिष्ठ वर्गों में विभाजित किया गया। प्रातः पांच बजे से रात्रि दस बजे तक चलने वाली समस्त दिनचर्या में इन वीरांगनाओं को आसन-प्राणायाम, कुंग-फू कराटे, सर्वांगसुन्दर व्यायाम, सूर्यनमस्कार आदि के व्यायाम तथा विभिन्न खेल खिलाए गये।

यज्ञ के अवसर पर ईश्वरोपासना, स्वाध्याय, अग्निहोत्र, आत्मनिरीक्षणादि करने का वीरांगनाओं ने व्रत लिया। पं0 धर्मधर आर्य ने देशभक्ति का जोशीला गीत वीरांगनाओंसे गवाया। तत्पश्चात् दल के संचालक आचार्य नपरेन्द्र शास्त्री ने आर्यवीर दल का संक्षिप्त परिचय दिया। प्रशिक्षित आर्य वीरांगनाओं के भजन, भाषण, संवादों एवं अनुभवों को सुनकर दर्शक वृन्द भाव-विभोर हो गये। शारीरिक प्रदर्शन, सर्वांगसुन्दर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, कराटे, आसनों के स्तूप एवं वैदिक गणित आदि को देखकर श्रोतागण मंत्रमुग्ध थे।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई के महामंत्री अरुण अब्रोल, आर्यसमाज सान्ताक्रुज के मंत्री रमेश सिंह, अलका केलकर, हीरालाल मकवाणा, शिवराजचती आर्या, राजकुमार सहगल आदि ने भी सहभागिता की। संयोजक पं0 धर्मधर आर्य ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

वैदिक दर्शन का वार्षिक सम्मेलन सम्पन्न

प्रभारंजन पाठक
मुम्बई।

वैदिक दर्शन प्रतिष्ठान, मुम्बई का प्रथम वार्षिक सम्मेलन कच्छी कडवा पाटीदार समाज वाडी बोरिवली (पू.) में आयोजित किया गया, जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य नामदेव आर्य धर्माचार्य आर्यसमाज सांताक्रुज, मुम्बई ने विशेष यज्ञ सम्पन्न कराया।

प्रवक्ता के रूप में आचार्य शिवदत्त पाण्डेय को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। उनके प्रवचन बहुत ही प्रभावशाली रहे। वीरेन्द्र मिश्रा एवं योगेन्द्र आर्य ने ओजस्वी एवं सुमधुर भजनों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। गुजरात से पधारे अरविन्द राणा सम्पादक- अग्निपथ एवं उनकी सुपुत्री ने अपनी विशेष कला से सभी को प्रभावित किया।

इस अवसर पर आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, टी0एस0 भाल, लद्धाभाई पटेल, प्रभारंजन पाठक, स्वामी योगानन्द आदि ने भी विचार व्यक्त किये। संचालन महामंत्री परेश पटेल ने किया, तथा अध्यक्षता प्रभारंजन पाठक ने की।

योग-ध्यान, साधना शिविर

भारतभूषण
उधमपुर।

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम, उधमपुर, जम्मू में आश्रम के चैतन्य मुनि के सान्निध्य में आगामी 11 से 15 अप्रैल तक निःशुल्क योग ध्यान आश्रम शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासान आदि कराए जाएंगे तथा योग दर्शन के पठन-पाठन की भी व्यवस्था है। शिविर में रोजड़, गुजरात से शिक्षित आचार्य संदीप आर्य, वैदिक प्रवक्ता अखिलेश भारतीय आदि अन्य अनेक विद्वान भी पधार रहे हैं। डॉ0 सुरेश योग द्वारा रोगोपचार भी करेंगे। इस अवसर पर पूज्य महात्मा जी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जाएगा।

सूक्ति सुधा

कृष्णा देवी शर्मा

(1) वेदोऽखिलो धर्म मूलम्। (मनु0 २/6)
वेद सम्पूर्ण धर्म का मूल है।

(२) धर्म जिज्ञास मानानां प्रमाणं श्रुतिः (मनु0 २/13)
धर्म जिज्ञासु जनों के लिए परम प्रमाण वेद है।

(3) वेद प्रणिहितो धर्मः (भागवत 6/1/40)
वेद में कही हुई विधि का नाम धर्म है।

(4) तद् वचनाद् आमनायस्य (वैशे0 1/1/3)
ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण वेद प्रमाणिक हैं।

(5) सर्व ज्ञानमयो हिसः (मनु0 २/7)
वेदों में सभी ज्ञान विज्ञान के सूत्र विद्यमान है।

(6) प्रियाः श्रुतस्य भूयासम् (अथर्व0 7/61/1)
हम सब वेदप्रेमी बनें।

(7) सु श्रुतेन गमे महि (अथर्व0 1/1/4)
हम वेदोपदेश से युक्त हों।

(8) वेद आमर (ऋ0 1/18/9)
वेद विद्या का दान करो।

(9) नास्तिको वेद निन्दकः (मनु0 २/11)
वेद का निन्दक नास्तिक है।

(10) मनुर्भव (ऋ0 10/53/6)
मनुष्य बनो।

(11) कृण्वन्तो विश्वमार्यम् (ऋ0 9/36/5)
सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाओ।

(१२) उप सर्प मातरं भूमिम् (ऋ0 10/18/10)
मातृभूमि की सेवा करो।

(13) माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः (अथर्व0 10/1२/1२)
यह भूमि मेरी माता है तथा मैं इसका पवित्र पुत्र हूं।

(14) अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु (यजु0 17/34)
हमारे सन्तान वीर और उत्कृष्ट हों।

(15) संगच्छध्वं संवदध्वम् (ऋ0 10/19/२)
मिलकर चलो और मिलकर बोलो।

(16) ऋतस्य पथा प्रेत (यजु0 7/45)
सत्य के मार्ग पर चलो।

(17) श्रमेण तपसा (अथर्व0 1२/5/1)
पूरुषार्थ सर्वोपरि है।

(18) एतं लोकं श्रद्दधानाः सचन्ते (अथर्व0 6/1२२/3)
उद्यमी को ही इस संसार में सुख मिलता है।

घटायन, मुजफ्फरनगर

युग-जागृति वैदिक गुरुकुल
गुरुग्राम (गुड़गांव) हरियाणा
: प्रवेश प्रारम्भ :

धनुर्वेद के महान आचार्य द्रोण की कर्मस्थली एवं अरावली की सुरम्य पर्वत श्रंखलाओं के मध्य सुविस्तृत भूखण्ड में स्थित श्रद्धेय आचार्य राम किशोर 'मेधार्थी' के कुशल निर्देशन में आधुनिक एवं प्राचीन शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त गुरुकुल संचालित है। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात् ही विद्यार्थी को कक्षा 3,4 व 5 में योग्यतानुसार प्रवेश दिया जा सकता है। यह संस्थान पूर्णतः आवासीय है।

संस्थान में प्राच्य व्याकरण के साथ-साथ अन्य सभी आधुनिक विषयों का नवीन शैक्षिक तकनीकी के द्वारा गहनता से अध्ययन कराया जाता है। शिक्षण संस्थान परिवेश पूर्णतः वैदिक संस्कारों से परिपूर्ण है। इसके साथ ही भोजन, आवास एवं अध्ययनादि की व्यवस्था भी अति उत्तम कोटि की है। समस्त अभिभावक बन्धु इसका लाभ उठाकर अपनी सन्तानों को सुशिक्षित, संस्कारवान, चरित्रवान एवं राष्ट्रभक्त बनाकर परिवार, समाज एवं राष्ट्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें।

विशेष : प्रवेश हेतु आवेदन एवं विवरण पुस्तिका संस्थान कार्यालय से किसी भी कार्यदिवस में 100/- भुगतान कर प्राप्त की जा सकती है। स्थान रिक्त रहने तक ही विद्यार्थी प्रवेश पा सकता है।

सज्जन सिंह
संस्थापक
चलभाष : 09810545951

आचार्य रामकिशोर मेधार्थी
कुलाधिपति/प्राचार्य
चलभाष : 08750614501, 0812650067२

ई-मेलः yugjagrti.sajjansingh@gmail.com

जब शिवरात्रि बनी 'बोधरात्रि'

छोटी सी घटना ने बनाया मूलशंकर से महान सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जिस समय प्रादुर्भाव हुआ उस समय सारा देश रूढ़िवादिता, ढोंग, अंधविश्वास, छुआछूत, अशिक्षा व सामाजिक कुरीतियों की दलदल में फंसा हुआ था। देश पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। राष्ट्र शक्ति सर्वथा क्षीण हो चुकी थी। फाल्गुन कृष्ण 10 सं. 1881 वि. तद्नुसार १२ फरवरी सन् 1824 को काठियावाड़ प्रदेश के टंकारा नगर में एक समृद्ध, संभ्रान्त औदिच्य कुल में स्वनाम धन्य श्री कर्सनजी तिवारी के घर में आशा की एक किरण का उदय हुआ जिसका नामकरण मूलशंकर किया गया। कालांतर में यही बालक महर्षि दयानन्द सरस्वती के रूप में विश्वभर में सुविख्यात हुआ।

वेदों के प्रबल उद्घोषक, स्वराज्य के सर्वप्रथम सन्देशवाहक, नारी उद्धारक, राष्ट्रभाषा हिन्दी के उन्नायक तथा महान सुधारक स्वामी महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन में एक छोटी सी घटना घटित हुई जो परिमाण में छोटी सी थी किन्तु परिणाम की दृष्टि से बहुत बड़ी थी जिसने उन्हें मूलशंकर से महर्षि दयानन्द बना दिया वो घटना थी टंकारा के शिवाल्य में शिवरात्रि के दिन वृत करते हुए चूहे की घटना से बोध का होना। फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी संवत् 1894 विक्रमी की यह घटना निश्चय ही स्मरणीय है। शिवालय में समस्त भक्तगण बड़ी श्रद्धा के साथ पूजा-अर्चना में तल्लीन थे। सभी को सारी रात जागरण करना था परन्तु रात्रि के तीसरे पहर तक बालक मूलशंकर को छोड़कर सभी भक्तगण यहां तक पंडे-पुजारी तथा पिताश्री कर्सनजी भी निद्रा देवी के पाश में आवद्ध हो गये। तभी मूल जी ने देखा कि चूहे आकर शिवलिंग पर चढ़े प्रसाद को उछल कूदकर छा रहे हैं। मूलशंकर के चित्ताकाश में अनेक विचार तरंगें उत्पन्न होने लगीं और प्रश्न कोंधने लगे। वे सोचने लगे कि सर्वशक्तिमान कहे जाने वाले त्रिशूलधारी शिव जी पर यह क्षुद्र प्राणी कैसे उछल-कूद मचा रहे हैं। क्या यही शिव वास्तव में सच्चे प्रलयंकारी शंकर हैं। ऐसे अनेकानेक प्रश्नों का समाधान न तो पिताश्री कर सके और न ही अन्य पंडित पुजारी। यही घटना बालक मूलशंकर के जीवन को आसाधारण मोड़ देने में सफल हुई और यहीं से उन्हें जड़ पूजा की निस्सारता का बोध हुआ और यहीं से सच्चे शिव के मर्म जानने का संकल्प जागृत हुआ। एक के बाद एक दो और बड़ी घटनाएं उनके जीवन में घटीं- छोटी बहन की हैजा के कारण मृत्यु और उनके अत्यन्त प्रिय चाचा की मृत्यु। ये वे घटनाएं थीं जिन्होंने उनके जीवन में निर्णायक मोड़ दिया। वे सोचने लगे कि क्या मृत्यु अवश्यंभावी है? क्या एक दिन मैं भी इसी प्रकार मर जाऊंगा? तथा संसार के जितने भी जीव हैं वे भी एक दिन न बचेंगे? अतः वे सोचने लगे कि कुछ ऐसा उपाय करना चाहिए जिससे यह दुख छूटे और मुक्ति हो। इसी भावना से उनका चित्त वैराग्य से भर उठा और एक दिन वे इन्हीं झंझावातों से संघर्ष करते हुए वैराग्य की ज्ञानाग्नि से ज्योतित होते हुए गृह त्याग करके अन्ततः यत्र-तत्र भटकते हुए युग प्रवर्तक व्याकरण के सूर्य दंडी स्वामी गुरुवर विरजानन्द की शरण में मथुरा जा पहुंचे। गुरु-शिष्य का यह ऐतिहासिक व पावन मिलन कालांतर में सम्पूर्ण विश्व को एक नूतन दिशा प्रदान करने वाला सिद्ध हुआ।

सराहनीय पहल

महोदय,

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्कूलों के अध्यापकों को अपने बच्चे सरकारी स्कूलों में पढाने का आदेश दिया है। जो सराहनीय है। आज तक यह होता आ रहा है कि अंगूठा–टेक अध्यापकों के सहारे गरीबों के बच्चे और उनके बच्चे कॉन्चैन्ट स्कूलों में पढते आ रहे हैं। प्रधानमंत्री जी आपने तो जड़ ही पकड़ ली है। अब भला भ्रष्टाचार कम क्यों नहीं होगा बस इसको शख्ती से लागू करना होगा। अभी और बहुत कुछ करना है शिक्षा के क्षेत्र में जब से नरेन्द्र मोदी प्रधान मंत्री बने हैं, कोई दिन ऐसा नहीं होगा, जिस दिन कोई जनहित की योजना नहीं बनी हो। यह सिलसिला चलता जाये– ऐसी ईश्वर से प्रार्थना है।

कान्ति बल्लभ जोशी
चन्द्र कलोनी, स्टेशन रोड, टनकपुर

महर्षि दयानन्द जी को अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में

13वें और 14वें समुल्लास की रचना क्यों करनी पड़ी?

हरिश्चन्द्र आर्य

तेरहवें समुल्लास में ईसाई मत सृष्टि आदम वावेल की मीनार अब्राहम मूर्ति पूजा, मूसा सवाय चमत्कारों ईसा के शूली पर चढ़ने एवं पुनः जीवित होने त्रित्व एवं ईसा के जीवन के विषय में चर्चा है।

चौदहवें समुल्लास में मुसलमानी मत की व्याख्या की है। इसमें पवित्र कुरान शैतान जन्नत (स्वर्ग) दोजख (नर्क) पैगम्बर, काफिरों के विरुद्ध युद्ध आदि-आदि पर तर्कसम्मत चर्चा की है। इसमें कुरान की एक सौ सूरतों में से केवल बासठ की ही आलोचना की है।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के सत्ता में आने के बाद बहुत सारे ईसाई मिशनरी भारत में घुस आये। उन्होंने हिन्दुत्व पर आक्रमण किया, मूर्तिपूजा और जगति प्रथा का खंडन किया और लोगों को बहुत बड़ी संख्या में ईसाई बनाना शुरु कर दिया। बहुत सारे लोगों ने हिन्दू धर्म को त्यागकर ईसाई मत ग्रहण कर लिया। यद्यपि भारत में मुस्लिम शासन व्यवहार में तो 18वीं शताब्दी के मध्य में ही समाप्त हो गया था, परन्तु एक नामधारी तुर्क बादशाह सभी अधिकारों और वैभव से वंचित ब्रिटिश सरकार के संरक्षण में दिल्ली की गद्दी पर बैठा था। मौलवी लोगों ने राजनीतिक शक्ति से विहीन होने के बाद धर्म-प्रचार की ओर ध्यान दिया और हिन्दुत्व पर चारों ओर से आक्रमण आरम्भ कर दिया।

1845 ई0 में मौलवी मुहम्मद इस्माइल कोकणी रत्नगिरि ने मौ0 इदरीस पुत्र अब्दुल्ला चालभाई के द्वारा एक पुस्तक 'रद्दे हिन्दू' प्रकाशित करायी, जिसमें हिन्दुओं पर आक्रमण किया गया था। इसका उत्तर चौबे बद्रीदास द्वारा 'रद्दे मुसलमान' नाम से प्रकाशित कराया। 1852 ई0 में पुनः मौलवी उबेदुल्ला (जो मूल रूप से हिन्दू था, इसका नाम अनन्तराम था, और उसने 1848 ई0 में इस्लाम स्वीकार कर लिया था) ने एक दूसरी पुस्तक 'तोहफेतुल हिन्द' प्रकाशित करायी, जिसका तीसरा संस्करण मेरठ के हाशमी प्रेस से 1860 ई0 में प्रकाशित हुआ। मुरादाबाद के मुंशी इन्द्रमणि ने इसका उत्तर 'तोहफेतुल इस्लाम' प्रकाशित कराकर दिया।

मौलवी सैयद महमूद हुसैन ने इसका प्रत्युत्तर 1865 ई0 में 'खिलातुल हुनूद' शीर्षक से प्रकाशित कराया। मुंशी इन्द्रमणि ने इसका उत्तर 1866 ई0 में 'पादशे इस्लाम' नाम से दिया। बरेली के कुछ मुसलमानों ने कविता में एक पुस्तक प्रकाशित करायी, जिसका नाम था 'मसनवी उसूले दीन हिन्दू' इसमें हिन्दू धर्म पर घिनौने आक्षेप लगाये गये थे। पुनः मुंशी इन्द्रमणि ने इस पुस्तक का उत्तर पद्यात्मक पुस्तक के रूप में ही 'मसनवी दीन अहमद' 1869 में प्रकाशित कराया। मुरादाबाद के एक मौलवी अहमद दीन ने 'ऐजाजे मौहम्मदी' और दूसरे मौलवी कुतुब आलम ने 'हिदायतुल इस्लाम' प्रकाशित करायी। इसके बाद मुंशी इन्द्रमणी जी ने इन दोनों पुस्तकों का उत्तर 'हमले हिन्द' ओर 'साम सामे हिन्द' प्रकाशित कराकर दिया। एक पुस्तक 'सौलते हिन्द' छपी। इसके बाद मौलाना मु0 हसन उपनाम फकीर ने लगभग 1873 में 'तेगे फकीरवार गर्दने शरीर फकीर की तलवार शरारती की गर्दन पर' शीर्षक से प्रकाशित करायी।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने सोचा कि आक्रमणों को विफल करना अति आवश्यक है। यही संभावित पृष्ठभूमि है स्वामी दयानन्द जी महाराज के 13वें और 14वें समुल्लास को लिखने की। जिससे हिन्दू, मुसलमान एवं ईसाइयों के उन आक्रमणों से अपनी रक्षा करने में समर्थ हो सकें।

राष्ट्रकवि डॉ0 रामधारी सिंह दिनकर ने संस्कृति के चार अध्याय पुस्तक में लिखा है कि 13वें, 14वें समुल्लासों की रचना से हिन्दू आक्रामक स्थिति में हो गया है।

-अधिष्ठाता उपदेश विभाग
प्रचार कार्यालय, अमरोहा

पाकिस्तान का व्यवहार

अतुल कुमार शुक्ला

सचमुच बड़ा कोफ्त होता है जब हम पढ़ते हैं "आज पाकिस्तान ने सीमा पर फिर से इतने गोले बरसाये, जिसमें इतने लोग मारे गये और इतने घायल हुए। इस घटना में हमारे कुछ जवान भी शहीद हो गये" इसके बदले में हमारी ओर से क्या कार्यवाही हुई, उसका क्या परिणाम निकला, दुश्मन के कितने मरे और कितने घायल हुए आदि हमारे किसी भी अखबार में ऐसी जानकारी बिल्कुल भी नहीं छपती। हो सकता है इस पर संभवतया सरकार की ओर से कोई ऐसे निर्देश हों। लेकिन इसका असर हमारी जनता पर क्या पड़ता है ? क्या हम इतने कमजोर हैं कि उस नापाक देश को इन कारस्तानियों को हमारे पास कोई समुचित उत्तर नहीं है ? यह बात जनता के मनोबल को गिराती है और एक सीमा तक इसका असर हमारे सैनिकों पर भी पड़ता है।

सीमा पर इस तरह की फायरिंग होना हमारे देश और हमारी सरकार के लिए एक आम बात हो गई है। एक या दो नहीं बल्कि कई बार ऐसी फायरिंग के कारण सीमा पर तैनात कई जवान और वहां रहने वाले नागरिकों ने अपनी जान गवाई है। खबरों के विस्तार में यह कहीं भी नहीं लिखा गया है कि हमलों का जबाब देने के लिए भारत सरकार ने क्या किया है ? इस समय यह सुनने को मिलना चाहिए कि हमारे रक्षा तथा गृहमंत्री सेना के कमांडरों से सलाह, मशवरा कर रहे हैं। गोलाबारी से बचने के लिए सीमा के आस–पास के लगभग 30 गांव अब तक खाली हो चुके हैं। ऐसा लगता है कि जब तक कोई सही कदम नहीं उठाया जाएगा, तब तक 40–50 गावों को सीमा से पलायन करना पडेगा। यह सब पाकिस्तान की गलत हरकतों का नतीजा है जो सीमा के लोग अपना आशियाना होने के बाद भी उन्हें खानाबदोशों की तरह जीवन जीना पड़ता है। कहते हैं इंसान अपने घर में अपने आपको सबसे ज्यादा सुरक्षित महसूस करता है। लेकिन सीमा के लोगों के लिए घर ही खतरों का द्वारा बन गया है जहाँ रात को सोने वाला सुबह जागेगा भी या नहीं यह किसी को पता नहीं होता। जो भी हो इनके पास एक ही विकल्प रह जाता है कि ये अपना घर–द्वार छोड़कर कहीं और जा बसें और अपने प्राण बचा सकें। लेकिन भारत के सैनिक क्या करें? उन्हें सरकार से कोई कदम उठाने का निर्देश प्राप्त नहीं होता है। पाकिस्तान द्वारा अपनाई गई गलत नीति को भारत को जबाब देना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ी अमन चैन से रह सके।

लाइनपार, मुरादाबाद

॥ सुस्वागतम् ॥

२२ से २८ फरवरी तक होगा भव्य एवं विशाल चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

पूज्य ब्र. जी की अमृतवाणी कैसेट, सी.डी. व डी.वी.डी. में

1. मधु शान्ति पाठ
२. मंत्र-पाठ
3. अमृत क्या है?
4. अक्षय क्षीर-सागर में विष्णु भगवान्
5. इन्द्र देवता
6. ब्रह्म विद्या
7. ब्रह्मवेत्ता
8. ब्रह्मसूत्र की व्याख्या
9. संसार एक यज्ञशाला
10. आत्मा का भोजन याग
11. अश्वमेध याग
१२. वाजपेयी याग
13. पंच-याग
14. त्रिकोण याग
15. सविता याग
16. स्वाहा की व्याख्या
17. चौबीस होता से एक होता तक
18. सुविधा न होने पर याग
19. याग की महत्ता
२०. काला हिरन यज्ञ को ले गया
२१. यज्ञ में गऊ के बछड़े की बलि का अर्थ
२२. यजमान का रथ द्योलोक में
२३. माता मदालसा
२४. राजा नल का दीपावली गान
२५. कपिल मुनि एवं राजा सगर
२६. लंका का विज्ञान
37. महर्षि विश्वामित्र को ब्रह्मवेत्ता की उपाधि
२८. भगवान राम का तप
२९. भगवान कृष्ण का जीवन, बटलोई वार्ता व जयद्रथ वध
30. महारानी द्रोपदी का जीवन, चीर हरन
31. महाराजा युधिष्ठिर का राजसूय याग
३२. निर्मोही नगरी
33. चित्त की वृत्तियों का निरोध
34. यम नचिकेता संवाद
35. मृत्यु क्या है?

इस युग के अद्भुत वेद-वक्ता थे ब्रह्मऋषि कृष्णदत्त

30 वर्ष पूर्व ही कर दी थी नश्वर शरीर के त्याग की उद्घोषणा

ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज इस युग के अद्भुत वेद-वक्ता थे। पूर्व जन्मों की स्मृति से वेद-संहिताओं का पाठ और पिफर उन मंत्राों की सरल व्याख्या अपने प्रवचनों में आदि ऋषियों-मुनियों की जीवन प्रणाली से समन्वय बनाते हुए की है। उन्होंने पूर्व जन्मों में देखी अनेक घटनाओं का विवरण दिया है जिनसे प्राचीन इतिहास के लुप्त अथवा विकृत तथ्यों की वास्तविकता का बुद्धिसंगत ज्ञान होता है। वे कर्मों के भोग, आत्मा के पुनर्जन्म और अंतःकरण में

जन्म-जन्मान्तरों के संचित संस्कारों के स्पष्ट प्रमाण थे। उन्होंने अपने प्रवचनों में परमपिता-परमात्मा के अथाह ज्ञान और विज्ञान को मानवता के लिए आचरण व व्यवहार में लाने का सरल व श्रेष्ठ मार्ग प्रदर्शित किया है जिससे कि मानव अपना व जनसाधारण का कल्याण करते हुए इस भवसागर से पार हो सकता है।

पूज्यपाद गुरूदेव ५० वर्ष की अवस्था में, १५ अक्टूबर, १९९२ को अपने नश्वर शरीर को त्याग कर ब्रह्मलीन हो गये। इसकी उद्घोषणा उन्होंने ३० वर्ष पूर्व ही ६ मार्च, १९६२ को कर दी थी।

महाभारतकालीन ऐतिहासिक टीले में आज भी विद्यमान हैं गुफाएं

पूर्व जन्म के श्रंगीऋषि पूज्यपाद ब्र. कृष्णदत्त जी महाराज के योग मुद्रा में दिये गये प्रवचनों से संग्रहीत वैदिक अमूल्य निधि पुस्तक एवं सीडी के रूप में उपलब्ध है

महर्षि महानन्द गुरुकुल महाविद्यालय (लाक्षाग्रह) बरनावा स्थित विशाल मुख्य यज्ञशाला -केसरी

पूज्य ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी की अमृतवाणी पुस्तक रूप में

1. आत्मलोक	२५/-	२५. यागमयी साधना	२५/-
२. आत्मा व योग साधना	२५/-	२६. यागमयी सृष्टि	२५/-
3. अलङ्कार व्याख्या	30/-	२७. दिव्य श्री रामकथा	100/-
4. यज्ञ प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40/-	२८. महाभारत एक दिव्य दृष्टि	80/-
5. धर्म का मर्म	40/-	२९. याग चयन	२५/-
6. देवपूजा	२०/-	30. ज्ञान-कर्म-उपासना	२५/-
7. रामायण के रहस्य	२५/-	31. अतीत का दिग्दर्शन (भाग-1,२,3) प्रत्येक भाग	100/-
8. महाभारत के रहस्य	२०/-	३२. दिव्य ज्ञान	30/-
9. महाराजा रघु का याग	२०/-	33. महर्षि विश्वामित्र का धनुर्याग	२५/-
10. मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	२०/-	34. आत्म उत्थान	30/-
11. वनस्पति से दीर्घ आयु	२०/-	35. तप का महत्व	30/-
१२. चित्त की वृत्तियों का निरोध	२५/-	36. अध्यात्मवाद	२५/-
13. आत्मा , प्राण और योग	२०/-	37. ब्रह्म विज्ञान	35/-
14. पंच महायज्ञ	२०/-	38. वैदिक प्रभा	30/-
15. अश्वमेघ याग और चन्द्रसूक्त	30/-	39. प्रकाश की ओर	35/-
16. योग मन्जूषा	२५/-	40. कर्तव्य में राष्ट्र	35/-
17. आत्मदर्शन	२५/-	41. वैदिक विज्ञान	35/-
18 पुत्रेष्टि-याग और मातृ दर्शन	२५/-	४२. धर्म से जीवन	30/-
19. यौगिक प्रवचन माला (भाग-1,२,3,4,5)प्रत्येक	50/-	43. Yogic Wisdom of Ancient Rishis	50/-
२०. यौगिक प्रवचन माला (भाग- 6,7) प्रत्येक	60/-	44. पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवं कर्मभूमि लाक्षागृह	10/-
२१. वेद पारायण यज्ञ का विधि विधान	२५/-	45. साधना	30/-
२२. रावण इतिहास	35/-	46. यज्ञोमयी-विष्णु	40/-
२३. याग और तपस्या	45/-	47. त्रेताकालीन विज्ञान	40/-
२४. यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	35/-	48. स्वर्ग का मार्ग	40/-
		49. शंका-निवारण	२५/-
		50. माता मदालसा	40/-

यहाँ उपलब्ध है ब्र. कृष्णदत्त जी का साहित्य

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य- पुस्तकों, कैसेट्स, सीडी/डीवीडी के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है :-

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, (बागपत) उ.प्र. दूर. : 01२34-२40395
२. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं0 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ0प्र0), 0131-२606414
3. कु0 नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली, 417२1२94, 09810887२07
4. श्री सुशील त्यागी, डी0-२93 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ0प्र0), 01२0-२64२052
5. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी, गढ़ रोड, मेरठ (उ0प्र0), 01२1-२76२818
6. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380 सेक्टर वीटा-२, ग्रेटर नोएडा (उ0प्र0), दूरभाष : 9456२74350
7. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम- बहेड़ी, रोहाना मिल, जिला- मुजफ्फरनगर (उ0प्र0)
8. श्री विवेक त्यागी, 16 अशोक कालोनी, अलकापुरी, हापुड़ (उ0प्र0), दूर. : 01२२-२316196
9. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, जिला- फरीदाबाद (हरियाणा)
10. श्रीमती बाला, २51, दिल्ली गेट, नई दिल्ली, दूरभाष : २3२82088
11. श्री पूनम त्यागी, 96-ए, सेक्टर-10, नोएडा (गौतमबुद्धनगर)
१२. मै0 गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली, दूरभाष : २3977२16
13. मै0 हर्ष मेडिकोज, ए-२/31, सै.-110 मार्केट, फेस-२, नोएडा, उ.प्र. दूर. : 01२0-6417159
14. जवाहर बुक डिपो, बुढ़ाना गेट, आर्यसमाज, मेरठ (उ0प्र0)
15. डॉ0 अशोक आर्य, आर्यावर्त कालोनी, मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.), चल. : 0941२139333

ओह! शिवजी के डमरू का कमाल!

आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा

लोक ने शिवरात्रि का अधिष्ठात्री देवता शिव को माना हुआ है। लोक के अनुसार अधिष्ठात्री देवता का स्वरूप है लम्ब गोल मटोल प्रस्थर वटिया। लोक ने इस पत्थर की वटिया को जहाँ ईश्वर माना, बहुत से उसके नाम रखे, वहीं कर्म भी उसके अद्‌भुत–अद्‌भुत बताये हैं। परमेश्वर, भव, शंकर, महेश्वर, महादेव, गिरीश, पिनाकी, शूलपाणी, शम्भू, स्थाणु, त्र्यम्बक, विशालाक्ष आदि नाम उसी प्रस्थर शिव देव के हैं। लोक ने यह और कमाल किया कि शिव के माहात्म्य में जब गोल–मटोल शिव का चित्रांकन किया, तो वह नृत्य मुद्रा में कर लिया। इस मुद्रा में शिव का एक चरण भूमि पर है और दूसरा भूमि से ऊपर। ४ हाथ हैं, एक हाथ में अग्नि का अम्बार है, एक में त्रिशूल, एक में डमरु है और एक आशीर्वाद की मुद्रा में है। सिर जटाजूट से भरा है, गंगा निकल रही है। जटाजूट में अर्ध चन्द्र भी है। गात्र में शेर की खाल पहनाई गई है। पैरों में पैजनिया हैं। चारों बाँहों में रुद्राक्ष व सर्प लिपटे हैं। सर्प तो सिर, गर्दन सर्वत्र हैं। शिव था, थै, थैया करने में निमग्न हैं।

लोक ने शिव की महत्ता की चमत्कारी कथाओं में यह चमत्कारी कथा भी जोड़ ली कि सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्मा ने शिव को फाल्गुन वदी चतुर्दशी को उत्पन्न किया। उस समय जगत् प्रलयावस्था में था। सर्वत्र शून्य ही शून्य था। सब अदृश्य था, तब उत्पन्न हुए शिव ने ताण्डव नृत्य किया। शिव के नृत्य से सृष्टि बन गई। इतना ही नहीं, नृत्य के पश्चात् शिव ने जो डमरु बजाया, उस डमरु के बजाते ही व्याकरण के १४ सूत्र प्रकट हो गये। यानी जो पाणिनीय अष्टाध्यायी के अइउण् आदि १४ प्रत्याहार सूत्र हैं, वे शिव के डमरु वादन से प्रकट हो गये।[1] शिवजी के डमरु के इस कमाल को मैं ही क्या? वे सभी वर्षों से सुनते चले आ रहे हैं, जब से व्याकरण पढ़ने का जो–जो प्रथम प्रयत्न आरम्भ करते हैं। सच्चाई यद्यपि यह नहीं, तथापि लोक की इस किंवदन्ती का, कि 'व्याकरण के १४ सूत्र शिव के डमरु से निकले हैं' नवीन वैयाकरणों ने बड़ा ही मान किया।[2] 'सिद्धान्त कौमुदी' के बनाने वाले भट्टोजि दीक्षित आदि वैयाकरणों ने अष्टाध्यायी के अइउण् आदि १४ सूत्रों को अपाणिनीय घोषित कर डाला। सिद्धान्त कौमुदी के प्रारम्भ में भट्टोजि दीक्षित ने लिखा है– **इति माहेश्वराणि सूत्राण्यणादिसंज्ञार्थकानि। सिद्धा॰ कौ॰ भाग॰ १, पृ॰ ११।।** अर्थात् अण् आदि संज्ञा प्रयोजन वाले ये माहेश्वर सूत्र हैं।

अइउण् आदि १४ प्रत्याहार सूत्रों को अपाणिनीय मानकर स्वरचित काशिका नामक व्याख्या में वैयाकरण नन्दीकेश्वर ने और भी स्पष्ट रूप से लिखा कि प्रत्याहार सूत्र डमरु से निकले हैं– **नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्। उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धान् एतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम्।। नन्दीकेश्वर काषिका।।** अर्थात् जिज्ञासा ग्रस्त ब्रह्मा के पुत्र सनक आदि ऋषियों के उद्धार करने की इच्छा वाले नटराज राज ने नृत्य के अन्त में १४ बार डमरु बजाया। इस डमरु वादन का अनुसन्धान शिवसूत्र रूपी जाल है।

नन्दीकेश्वर के कथन का तात्पर्य है कि अइउण् आदि सूत्र शिव द्वारा उत्पन्न किये गये हैं। लोक, भट्टोजि दीक्षित एवं नन्दीकेश्वर की यह चमत्कारी मान्यता कि 'शिव के डमरु बजाने पर १४ सूत्र निकले' यह न मान्य हो सकती है, न विश्वसनीय है। क्योंकि शब्द, वर्ण की उत्पत्ति आत्मा की प्रेरणा से मन के संयुक्त होने पर कण्ठ, तालु आदि स्थानों से होती है।

वर्ण कैसे प्रकट होते हैं? इसका स्पष्टीकरण वर्णोच्चारण शिक्षा के ग्रन्थों में किया गया है। यथा– **आकाशवायुप्रभवः शरीरात् समुच्चरन् वक्त्रमुपैति नादः। स्थानान्तरेशु प्रविमज्यमानो वर्णत्वमागच्छति यः स शब्दः।। पाणि॰ वर्णो॰ शि॰ पृ॰ 2।।**

अर्थात् आकाश, वायु के संयोग से उत्पन्न होने वाला नाभि के नीचे से ऊपर उठता हुआ, जो मुख को प्राप्त होता है, उसे नाद कहते हैं। वही नाद कण्ठ आदि स्थानों में विभक्त होता हुआ वर्णत्व भाव को प्राप्त होता है। वे वर्ण ही शब्द कहे जाते हैं। तात्पर्य स्पष्ट है कि वर्ण व शब्द कण्ठ, तालु, जिह्वा आदि द्वारा ही निकलते हैं, डमरु से नहीं।

डमरु से निकलने वाला जो है, वह तो ध्वनि है, वर्ण नहीं है। डमरु को बजाने पर तो डमरु से निकलने वाली ध्वनि का डम–डम स्वरूप वाला शब्दानुकरण अनुमानित किया जाता है, सार्थक शब्दों का नहीं। डमरु बजे, नगाडा बजे या कुछ भी बजे, किसी से भी वर्ण की उत्पत्ति नहीं होती, मात्र ध्वनि प्रकट होती है। उस ध्वनि से शब्दानुकरण का अनुमान मात्र किया जाता है। तभी तो 'पटत्–पटत् शब्द करता है' आदि

क्रियाओं के लिए संस्कृत में पटपटायति, पटपटायते, वा क्यषः, पा॰ १/३/८६ एतादृश अनुकरण जन्य शब्द प्रयोग हुआ करते हैं।

डमरु से शब्द निकलते होते, तो आज भी खूब डमरु बजते हैं, उनसे भी अष्टाध्यायी के अइउण् आदि सूत्र न सही, पर अन्य सूत्र तो निकलते? किन्तु ऐसा नहीं, अतः अइउण्, ऋलृक् आदि १४ प्रत्याहार सूत्र महर्षि पाणिनि द्वारा ही रचित हैं और वे सुवैज्ञानिक हैं। इन सूत्रों के बिना अष्टाध्यायी के अन्य सूत्र अधूरे हैं। पाणिनीय विरचित अष्टाध्यायी में ३,९६४ जो सूत्र हैं, उन सूत्रों के प्रत्याहार सूत्र आधार स्तम्भ हैं। उरण् रपरः, पा॰ १/१/५१, अणुदित् सवर्णस्य चाप्रत्ययः, पा॰ १/१/६६, आदि सूत्रों की पूर्णता प्रत्याहार सूत्रों के होने पर ही है। समस्त अष्टाध्यायी के आधारभूत ये प्रत्याहार सूत्र पाणिनि मुनि द्वारा ही विरचित हैं। अन्य के द्वारा बनाये गये आधार सूत्र, अन्य के आधार नहीं बन सकते।

सम्पूर्ण आर्ष संस्कृत वाड्मय में कोई भी ऐसा ग्रन्थ नहीं है, जिसमें कहा गया हो कि प्रत्याहार सूत्र अपाणिनीय हैं। पाणिनीय प्रत्याहार सूत्रों को अपाणिनीय बताने वाले मात्र भट्टोजि दीक्षित और नन्दीकेश्वर की काशिका हैं। दीक्षित व नन्दीकेश्वर की बुद्धि में प्रत्याहार सूत्र के डमरु से निकलने का फितूर कब और कैसे उपजा, यह तो दीक्षित और नन्दीकेश्वर ही जानें। प्रत्याहार सूत्र पाणिनीय हैं, इसके तो अनेक प्रमाण हैं। यह अति सुखद व महत् गौरवपूर्ण तथ्य है कि प्रत्याहार सूत्रों को पाणिनीय बताने वाले उन अनेक प्रमाणों का अन्वेषण सर्वप्रथम स्वामी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ही किया। प्रत्याहार सूत्र पाणिनि ने ही बनाये, इसे प्रमाणित करते हुए महर्षि दयानन्द ने अपने 'अष्टाध्यायी भाष्यम्' ग्रन्थ में अक्षार समाम्नाय के १४ सूत्रों के अन्तिम सूत्र हल् सूत्र में महाभाष्यकार के पात॰ महाभा॰ सू॰ हय॰ पृ॰ ११७, वचन को उद्धृत करते हुए लिखा–

अत्र प्रत्याहारेषु केचिद् भट्टोजिदीक्षितादयः संप्रवदन्ति– इमानि माहेश्वराणि सूत्राणीति। महेश्वरादागतानि, महेश्वरेण प्रोक्तानि वा। तदिदमसत्यम्। कथम्? तत्र प्रमाणाभावात्। अत्र तु प्रमाणम्– एषा ह्याचार्यस्य शैली लक्ष्यते यत्तुल्यजातीयांस्तुल्यजातीयेषूपदिशति। अचोघ्क्षु, हलो हल्सु। दया॰ भा॰ अष्टाध्या॰ प्रत्या॰ सू॰ १४।। अर्थात् सिद्धान्त कौमुदी को बनाने वाले भट्टोजि दीक्षित आदि यहाँ प्रत्याहार सूत्रों के विषय में कहते हैं कि ये प्रत्याहार सूत्र माहेश्वर महादेव के बनाये हैं, वह असत्य हैं, क्योंकि कोई प्रमाण न होने से प्रत्याहार सूत्र पाणिनि ने बनाये हैं, इसमें बहुत से प्रमाण हैं– यह आचार्य की शैली से ही ज्ञात होता है कि पाणिनि तुल्य जातियों को तुल्य जाति में उपदिष्ट करता है। अचों को अचों में, हलों को हलों में।

वचन में आये अच् और हल् प्रत्याहार हैं। अच् के अन्दर अइउण् के अ से लेकर ऐऔच् के च् पर्यन्त अ आदि सभी स्वरों का ग्रहण होता है। हल् के अन्दर हयवरट् के ह से लेकर हल् के ल् पर्यन्त सभी व्यञ्जनों का ग्रहण होता है। यदि प्रत्याहार सूत्र पाणिनि ने न बनाये होते तो पतञ्जलि 'अचोघ्क्षु, हलो हल्सु' कहकर आचार्य पाणिनि की रचना शैली का कथन न करते।

महर्षि दयानन्द से पूर्व इस लोक प्रसिद्ध अविश्वसनीय किंवदन्ती का पर्दाफाश करने का साहस न पहले किसी ने किया और न किसी वैयाकरण का आज है। महर्षि दयानन्द ने ही सर्वप्रथम सत्य व दृढ़ता के साथ इस किंदन्ती को झूठ बताया। उन्होंने वर्षों से चली आ रही 'शिव के डमरु से प्रत्याहार सूत्र निकले' इस झूठी किंवदन्ती को पतंजलि का प्रमाण उद्धृत कर बड़ी स्पष्टता से तार–तार कर दिया।

महर्षि दयानन्द की दृष्टि में पाणिनि महर्षि व्याकरण के महनीय विद्वान् हैं। दयानन्द ने व्याकरण ग्रन्थों के गम्भीर अनुसन्धान से भली भाँति जान लिया था कि प्रत्याहार सूत्रों की रचना पाणिनि ने ही की है। महर्षि दयानन्द लिखते हैं– 'जिन पाणिनि महाराज जी ने सब व्याकरण के सूत्र बनाये, तो क्या प्रत्याहार सूत्र नहीं बना सकते थे?' दया॰ भा॰ अष्टाध्या॰ प्रत्या॰ सू॰ १४।।

महर्षि के इस वाक्य में जहाँ आचार्य पाणिनि के प्रति, जिसकी देशिक वैयाकरणों ने महती **सूक्ष्मेक्षिका वर्तते सूत्रकारस्य,** जयादित्य पा॰ ४/२/७४, अर्थात् आचार्य पाणिनि की बड़ी सूक्ष्म दृष्टि है कहकर मुक्त कण्ठ से महती प्रशंसा की है। वैदेशिक सर W.W. हण्टर आदि विद्वानों ने 'संसार के व्याकरणों में पाणिनि का व्याकरण चोटी का है' कहकर प्रशंसा की है, उनका गर्व है, वहीं भट्टोजि दीक्षित आदि नव्य वैयाकरणों का उपहास भी है। झूठ को झूठ, सत्य को सत्य कथन करने वाले महर्षि दयानन्द ने भी डमरु वादक शिव का फाल्गुन की चतुर्दशी को बालकपन में अपने पिता कर्षनलाल जी के कहने पर व्रत किया था। उनका वह व्रत सामान्य जनों की भाँति नहीं था। उन्होंने तो उस व्रत में सत्य शिव को खोजने का संकल्प लिया। उन्होंने प्रस्थर के देव शिव की असलियत तो जानी ही, साथ ही आर्ष परम्परा के साथ किये जा रहे असत्य प्रवादों का भी भाण्डा फोड़ा। इसमें कोई सन्देह नहीं है। महर्षि दयानन्द के व्रत से शिवरात्रि धन्य हो गई।

प्रत्याहार के १४ सूत्र पाणिनि के हैं, इसे प्रमाणित करते हुए महाभाष्यकार पतंजलि मुनि ने

अगले पृष्ठ पर जारी....

गत पृष्ठ का शेष.....

महाभाष्य में अन्यत्र भी लिखा है– **कृतमनयोः साधुत्वम्। कथम्? वृद्धिरस्मा अविशेषेणोपदिष्टः प्रकृतिपाठे, तस्मात् क्तिन् प्रत्ययः, आदैचोऽप्यक्षारसमाम्नाय उपदिष्टाः।** पात• महाभा• १/१/२, पृ• १३५।। अर्थात् आत्, ऐच् दो होते हैं, पुनरपि द्वन्द्व होने से यह आदैच् निर्देश ठीक है। कैसे? व्याकरण अध्येता के लिए धातुपाठ में वृद्धि धातु पढ़ी है, उससे क्तिन् प्रत्यय करके वृद्धि शब्द बनता है। आत्, ऐच् भी अक्षर समाम्नाय में उपदिष्ट हैं। पतंजलि के इस वचन से सुस्पष्ट है कि अइउण् आदि अक्षर समाम्नाय पाणिनि द्वारा प्रोक्त हैं।

निरुक्त भाष्यकार स्कन्द स्वामी प्रत्याहार सूत्रों को पाणिनीय ही मानते हैं। उन्होंने समाम्नायः, समाम्नातः की व्याख्या करते हुए लिखा है– **नापि अइउण् इति पाणिनीयप्रत्याहारसमाम्नायवत्।** स्क• निरु• १/१/१, पृ• ८।। अर्थात् अइउण् आदि पाणिनीय प्रत्याहार समाम्नाय के समान भी यह निघण्टु का समाम्नाय नहीं है। स्कन्द स्वामी के इस कथन से स्पष्ट है कि प्रत्याहार सूत्र पाणिनि द्वारा ही बनाये गये हैं।

कुलशेखर वर्मा जिन्होंने 'आश्चर्यमञ्जरी' की रचना की है। उन्होंने प्रत्याहार सूत्रों को पाणिनि कृत माना है। यथा– **पाणिनिप्रत्याहार इव महाप्राणाझषाश्लिष्टो झषालंकृतश्च समुद्रः।** अमरटीका सर्वस्व भाग–१, पृ• १८६।। अर्थात् पाणिनि कृत प्रत्याहार के समान महाप्राण झशों से श्लिष्ट झषालंकृत वह समुद्र है। कुलशेखर वर्मा के इस उद्धरण से भली भाँति परिज्ञात है कि प्रत्याहार सूत्र पाणिनि रचित हैं।

अन्यच्च प्रत्याहार सूत्रों की प्रामाणिकता में यह भी प्रमाण है कि अष्टाध्यायी के प्राचीन हस्तलेखों में प्रायः हल् सूत्र के अनन्तर इति प्रत्याहारसूत्राणि लिखा गया है, माहेश्वर सूत्र नहीं। इस प्रकार प्रत्याहार सूत्र पाणिनि कृत हैं, शिव के डमरु से निःसृत नहीं हुए।

व्याकरण परम्परा की ऐतिहासिक दृष्टि से भी प्रत्याहार सूत्र डमरु से निःसृत सिद्ध नहीं होते। व्याकरण के २ प्रकार के ग्रन्थ हैं– एक प्राचीन, दूसरे अर्वाचीन। पाणिनि के पश्चात् के ग्रन्थ अर्वाचीन और पाणिनि के पूर्व के ग्रन्थ प्राचीन जाने जाते हैं। व्याकरण के प्राचीन आचार्य अनेक हैं। पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी में प्राचीन आचार्यों में से आपिशलि, काश्यप, गार्ग्य, गालव, चाक्रवर्मण, भारद्वाज, शाकटायन, शाकल्य, सेनक, स्फोटायन इन १० आचार्यों का उल्लेख किया है। शिव= महेश्वर (६१,५०० वि• पूर्व), बृहस्पति (१०,००० वि• पूर्व), वायु (६, ५०० वि• पूर्व), भारद्वाज (६,३०० वि• पूर्व), चारायण (३१०० वि• पूर्व), काशेकृत्स्न (३१०० वि• पूर्व), सान्तनव (३१०० वि• पूर्व), वैयाघ्रपद्य (३१०० वि• पूर्व), माध्यन्दिनि (३००० वि• पूर्व), रौढि (३००० वि• पूर्व), शौनकि (३००० वि• पूर्व), गौतम (३००० वि• पूर्व), व्याडि (२६०० वि• पूर्व) इन १६ आचार्यों का उल्लेख नहीं किया। पं• युधि• सं• व्या• शास्त्र का इतिहास।।

इन अनुल्लिखित १६ आचार्यों में ऐतिहासिक शिव महेश्वर व्याकरण के अति प्राचीन आचार्य हैं। ये व्याकरण के प्रकृष्ट विद्वान् थे। महाभारत आदि ग्रन्थों से प्रज्ञात होता है कि शिव महेश्वर ने षडङ्गों का ग्रथन किया था। इन वैयाकरण शिव महेश्वर का शिवरात्रि के अधिष्ठात्री देवता के साथ संबन्ध जोड़ना भी इतिहास के विरुद्ध है। वंशब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार वैयाकरण शिव महेश्वर की माता सुरभि एवं पिता प्रजापति कश्यप हैं और अधिष्ठात्री देवता शिव के पिता किंवदन्ती के अनुसार ब्रह्मा हैं। प्राचीन आचार्य महेश्वर ने षडङ्गों का ग्रथन किया था, इसका वर्णन महाभारत के शान्तिपर्वान्तर्गत मोक्षधर्म पर्व में आता है। यथा– **वेदात् शडङ्गादुद्धृत्य•**। महाभा• शान्ति• २८४/१८७।। अर्थात् वेदों से षडङ्गों को उद्धृत करके षडङ्ग बनाये। षडङ्गों में व्याकरण भी आता है, अतः स्पष्ट है महेश्वर व्याकरण के प्रवक्ता थे।

हैमबृहद् वृत्यवचूर्णि में अनेक व्याकरणों का वर्णन है। उनमें ऐशान व्याकरण का भी निर्देश है। यह ऐशान व्याकरण शिव महेश्वर का है। आचार्य शिव महेश्वर को ईशान भी कहा जाता है। उन अनेक व्याकरणों का निर्देशक वचन है– **ब्राह्ममैशानमैन्द्रं च प्राजापत्यं बृहस्पतिम्। त्वाष्ट्रमापिशलं चेति पाणिनीयमथाष्टमम्।।** हैम• वृत्य• पृ• ३।। अर्थात् ब्राह्मम्= ब्रह्मा प्रोक्त, ऐशानम्= ईशान शिव प्रोक्त, ऐन्द्रम्= इन्द्र प्रोक्त, प्राजापत्यम्= प्रजापति प्रोक्त, बृहस्पतिम्= बृहस्पति प्रोक्त, त्वाष्ट्रम्= त्वष्टा प्रोक्त, च= और, आपिशलम्= आपिशलि प्रोक्त व्याकरण हैं, अथ= और, पाणिनीयम्= पाणिनि प्रोक्त, इति= ये, अष्टमम्= ८वाँ व्याकरण है।

यावलाष्टक तन्त्र शास्त्र के अनुसार केशव ने भी महेश्वर को वैयाकरण मानकर लिखा है–

यस्मिन् व्याकरणान्यष्टौ निरूप्यन्ते महान्ति च।।
तत्राद्यं ब्राह्ममुदितं
द्वितीयं चान्द्रमुच्यते।
तृतीयं याम्यमाख्यातं
चतुर्थं रौद्रमुच्यते।।
वायव्यं पञ्चमं प्रोक्तं
षष्ठं वारुणमुच्यते।
सप्तमं सौम्यमाख्यातमष्टमं
वैष्णवं तथा।।

केशव ऋग्वेदकल्पद्रुम यावला• तन्त्र• १०–१२।। अर्थात् जिसमें महान् ८ व्याकरण निरूपित किये जाते हैं, उनमें आदि व्याकरण ब्रह्मा प्रोक्त, द्वितीय चन्द्र प्रोक्त कहा जाता है। याम्य तृतीय कहा जाता है, चतुर्थ रौद्र कहा जाता है। वायव्य प्रोक्त ५वाँ, वरुण प्रोक्त षष्ठ कहा जाता है। सौम्य को सप्तम कहा जाता है और वैष्णव को ८वाँ कहा जाता है। इन श्लोकों में रौद्र शब्द आया है। वह रुद्र= शिव आचार्य महेश्वर द्वारा प्रोक्त व्याकरण का ही ज्ञापक है।

व्याकरण के स्रष्टा महेश्वर को रुद्र क्यों कहा गया? क्योंकि महेश्वर के १० अन्य और सहोदर भाई थे। महेश्वर को मिलाकर ये कुल ११ भाई हुए। शिव सब भाइयों में बड़े थे। एकादश रुद्रों की संख्या साम्य से आचार्य महेश्वर भी विद्वत्समाज में रुद्र कहे जाते थे।

सारस्वत भाष्य में भी आचार्य महेष्वर के व्याकरण का वर्णन है–

समुद्रवद् व्याकरणं महेश्वरे तदर्धकुम्भोद्धरणं बृहस्पतौ।

तद्वागभागाच्च शतं पुरन्दरे कुशाग्रबिन्दूत्पतितं हि पाणिनौ।।[3] सारस्वत भा•।। अर्थात् महेश्वर प्रोक्त व्याकरण समुद्र के समान है, बृहस्पति प्रोक्त व्याकरण उसके समक्ष कुम्भ के समान है, पुरन्दर= इन्द्र प्रोक्त व्याकरण पूर्वोक्त व्याकरणभागों का १००वाँ भाग करने के समान व्याकरण है। पाणिनि प्रोक्त व्याकरण में तो कुशाग्र बुद्धि के बिन्दुओं से निकला हुआ व्याकरण सार है।

आचार्य महेश्वर ने व्याकरण के अतिरिक्त अर्थशास्त्र, वैद्यक शास्त्र, धनुर्वेद, वास्तु शास्त्र, नाट्य शास्त्र, छनदः शास्त्र, मीमांसा शास्त्र[4] आदि अन्य ग्रन्थों की भी रचना की है। आचार्य ब्रह्मा के सदृश महेश्वर शिव भी अनेक विद्याओं के प्रवर्तक थे।

महाभारत शान्तिपर्व के १४२वें अध्याय के ४७वें श्लोक में ७ वेदज्ञों के नाम हैं, उनमें शिव वेदज्ञ की भी गणना है।

शिव महेश्वर गीत वादित्र, शिल्प आदि के ज्ञाता थे। इसका वर्णन महाभारत के शान्तिपर्व के २८४वें किया गया है। यथा–

संख्याय सांख्यमुख्याय सांख्ययोगप्रवर्तिने।।

महाभा• शान्ति• २८४/१०६।।

गीतवादित्रतत्त्वज्ञो गीतवादनकप्रियः।।

महाभा• शान्ति• २८४/१३७।।

शिल्पिकः शिल्पिनां श्रेष्ठः सर्वशिल्पप्रवर्तकः।।

महाभा• शान्ति• २८४/१४३।। अर्थात् सांख्य योग प्रवर्तक, सांख्य प्रधान सांख्य शास्त्र के प्रवचन करने वाले शिव महेश्वर को नमस्कार है। (यहाँ नमः पद का महाभा• शान्ति• २८४/१०७ से अध्याहार जानना चाहिये।)

महेश्वर गीतवादित्र के तत्त्वज्ञ एवं गाने बजाने के प्रिय हैं।

शिव महेश्वर शिल्पियों में सर्वश्रेष्ठ शिल्पी एवं सर्वविध शिल्पियों के प्रवर्तक हैं। ज्ञान विज्ञान के प्रवक्ता ज्ञाता होने से शिव महेश्वर को गुह्य गुरु भी कहा जाता है। वे बाल्य काल से ही ज्ञानी थे। उन्होंने किसी को गुरु नहीं बनाया, वे साक्षात्तधर्मा थे।[5]

इस प्रकार संस्त वाङ्मय से स्पष्ट है कि वैयाकरणों में शिव महेश्वर व्याकरण के महाविद्वान् थे। प्राचीन वैयाकरणों के २ सम्प्रदाय प्रसिद्ध हैं– १• ऐन्द्र, २• शिव महेश्वर। शिव महेश्वर के नाम पर शैव सम्प्रदाय चला। आचार्य पाणिनि उस शैव सम्प्रदाय के वैयाकरण तो हैं, पर उनके गुरु शिव महेश्वर नहीं हैं। पाणिनि के गुरु तो वर्ष थे। संस्कृत वाङ्मय से यह भी सिद्ध हुआ कि ईश्वर रूप में कल्पित शिव के डमरु से सूत्र प्रकटीकरण का प्रमाणाभाव होने से प्रत्याहार सूत्र डमरु का कमाल नहीं है। प्रत्याहार सूत्र तो पाणिनि ने ही बनाये हैं। शिवरात्रि के अधिष्ठात्री देवता शिव ने डमरु बजा कर प्रत्याहार सूत्र नहीं बनाये। प्रत्याहार सूत्रों के डमरु से निकलने की किंवदन्ती मात्र कपोल कल्पित है।

भट्टोजि दीक्षित आदि नव्य वैयाकरणों ने जहाँ प्रत्याहार सूत्रों को अपाणिनीय घोषित करने की विडम्बना की, वहीं सम्पूर्ण अष्टाध्यायी को क्रम भंग कर तितर बितर कर दिया। संस्कृत भाषा व संस्कृत के व्याकरण का अध्ययन दुष्पाठ्य बना दिया। संस्कृत की उपेक्षा व दुर्दशा में भट्टोजि दीक्षित जैसे जनों का बहुत बड़ा हाथ है।

महर्षि दयानन्द का ही महान् प्रयत्न था कि उन्होंने आर्ष परम्परा के ग्रन्थों का पठन–पाठन पुनः चलाया। महर्षि दयानन्द ने आर्ष परम्परा के पठन–पाठन के साथ ईश्वर के यथार्थ स्वरूप को भी स्पष्ट किया। ईश्वर के नाम पर गढ़ा गया शिवलिंग ईश्वर नहीं है, यह दृढ़ उद्घोष भी महर्षि दयानन्द ने ही किया।

प्रचलित शिवलिंग की पूजा न करने का उद्घोष कर उन्होंने ही सचेत किया कि ईश्वर तो व्यापक सत्ता है, निराकार सत्ता है। शिवलिंग से भिन्न चेतनवान् सत्ता है। दयानन्द ने ही बताया कि वेद, उपनिषद् आदि वैदिक शास्त्र ईश्वर को सर्वव्यापक सिद्ध करते हैं। वह प्रस्थर मात्र में नहीं है, परमेश्वर तो व्यापक व अनन्त है। ईश्वर की अनन्तता में दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में तैत्तिरीयोपनिषद् का एक वचन उद्धृत किया है, जिससे सुस्पष्ट है कि परमेश्वर अनन्त है। यथा– **सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म।** तैत्ति• उ• २/१।। सत्या• प्र• पृ• २१।। अर्थात् परमेश्वर सत्य, ज्ञान अनन्त स्वरूप वाला है।

उपनिषद् वचन से स्पष्ट है कि परमेश्वर अनन्त है। ब्रह्माण्ड अनन्त है, अनन्त ब्रह्माण्ड का शासक भी अति अनन्त है। ब्रह्माण्ड के शासक उस अनन्त को ईश्वर ही नहीं, परमेश्वर कहा जाता है। अनन्त परमेश्वर का ब्रह्माण्ड व पिण्ड के कण–२ में वास है। कोई भी पदार्थ ऐसा नहीं जिसमें परमेश्वर न हो। ब्रह्माण्ड और पिण्ड परमेश्वर के सामर्थ्य से ही स्थिर हैं। दैवी जगत्, मानुषी जगत् सबका आधार परमेश्वर है। परमेश्वर को ब्रह्माण्ड या पिण्ड के किसी निश्चित अवयव में इंगित कर पाना असम्भव है। परमेश्वर के अनन्त स्वरूप को न पकड़ने की इस असंभवता को राजा जनक की सभा में अहंमन्य विदग्ध शाकल्य द्वारा ब्रह्माण्ड और पिण्ड की आधारशिला आत्म तत्त्व के ऊपर उठाये गये प्रश्नों पर फटकार लगाते हुए परमात्मवित् ऋषि याज्ञवल्क्य ने इन शब्दों में विज्ञापित की है–

स एष नेति नेत्यात्माघ्गृह्यो न हि गृह्यतेघ्शीर्यो न हि शीर्यतेघ्संगो न हि सज्यतेघसितो न व्यथते न रिष्यति।। बृहदा• उप• ३/६/२६।। अर्थात् वह आत्म तत्त्व परमेश्वर 'यह नहीं है यह नहीं है' इस रूप में ही उसका वर्णन हो सकता है। परम तत्त्व अग्राह्य है, वह इन्द्रियों की पकड़ से बाहर है, वह इन्द्रियों की पकड़ में नहीं आता। वह अशीर्य है, उसका नाश नहीं होता, वह अक्षय है, वह असंग है, वह किसी से लिप्त नहीं होता, वह निर्लेप है, बन्धन से रहित है, उसका शरीर नहीं होता। पीड़ा रहित है, दुःखों से परे है, वह अविनाशी है, नाश रहित है।

शेष पृष्ठ– 10 पर...

महर्षि दयानन्द का अमर ग्रंथ–सत्यार्थ प्रकाश

संजय सत्यार्थी

सत्यार्थ प्रकाश देश, धर्म, संस्कृति का रक्षक, क्रान्तिकारी ग्रंथ है, इसे जानें, समझें और अवश्य पढ़ें।

हमारा देश भारत सदियों तक विश्व गुरू रहा। जब विश्व भर में एक ही धर्म वैदिक धर्म, एक ही धर्म ग्रंथ वेद, एक ही उपास्य देव–ओ3म्, ही जातीय श्रेष्ठ नाम आर्य, एक ही अभिवादन–नमस्ते। एक ही विश्वभाषा संस्कृत और एक ही सांस्कृतिक ध्वज–ओ3म् की प्रतिष्ठा थी, तब तक सारे विश्व में वैदिक संस्कृति का ही साम्राज्य था। एक ओर जहां त्रेता युग में मर्यादा पुरूषोत्तम् राम ने वेदों की प्रतिष्ठा स्वीकार की वहीं द्वापर युग में योगेश्वर कृष्ण ने अपनी शक्ति भर इस महान राष्ट्र के पतन को रोका, खण्ड–खण्ड भारत को महाभारत बनाने का अथक प्रयास किया, गीता का संदेश दे कर्म योग का पाठ पढ़ाया और वैदिक संस्कृति के प्राण तत्व वर्णाश्रम धर्म की रक्षा की।

परन्तु समय का चक्र घूमा, महाभारत के युद्ध में इतने धन–जन, विद्वानों शूरवीरों, कर्म वीरों, दानवीर आदि का बलिदान देना पड़ा। जिसमें श्रीकृष्ण का पुरूषार्थ भी राष्ट्र को संभाल नहीं सका। पतन का जो दौर प्रारम्भ हुआ उसे बीच–बीच में युद्ध, महावीर शंराचार्य जैसी दिव्य विभूतियों ने संभालने का प्रयास किया परन्तु वैदिक विचार धारा से दूर होने के कारण सफलता नहीं मिली। परिणामतः अज्ञानता, परतंत्रता, दरिद्रता, अधार्मिकता ने हमारे राष्ट्र जीवन को जकड़ लिया। यह विश्व गुरू भारत शत सहस्त्र मत मतांन्तरों और विदेशी सभ्यता का क्रीतदास बन गया। ऐसी घटाघोप अन्धिधारी में विश्वात्मा प्रभु की असीम अनुकम्पा से गुजरात में टंकारा नामक स्थान में कर्षण जी के घर फाल्गुन कृष्ण दसमी सम्वत् 1881 (ई0 1824) को एक बालक ने मूलशंकर के रूप में जन्म लिया, जो स्वामी दयानन्द बन, 1860 से 63ई0 तक गुरू विरजानन्द जी के पास विद्याध्ययन कर गुरू से जो गुर अर्थात् ज्ञान पाया, उस ज्ञान से संसार को आलोकित कर दिया। फिर से अतीत को वर्तमान करने और वैदिक युग को लाने के लिए अपने जीवन और जवानी को न्योछावर कर दिया। हजारों शास्त्रार्थ कर क्रान्ति का शंखनाद किया। पूरे विश्व में पुनः वैदिक संस्कृति हिलोर लेने लगी। मुरादाबाद के राजा जय किशन दास के निवेदन पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 1874 ई0 में कालजयी ग्रंथ '' सत्यार्थ प्रकाश'' की रचना कर वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात कर दिया। यह अनुपम ग्रंथ जिसे ऋषि के स्वाध्याय के तीन हजार ग्रंथों का सार कहा जा सकता है, जिसमें 377 ग्रंथों का प्रमाण दे कर 1542 वेद मंत्रों या श्लोकों का उद्धरण दिया गया है। साढ़े तीन माह में लिखे गये इस ग्रंथ में केवल और केवल सत्य को ही प्रकाशित किया गया है। इस कारण यह मौलिक विचारों का ग्रंथ बन गया, जो समाज को एक सिरे से दूसरे सिरे तक को दिला दिया। सत्यार्थ प्रकाश चुने हुए क्रान्तिकारी विचारों का खजाना है। समाज की रचना जन्म के आधार पर न होकर कर्म के आधार पर होनी चाहिये। सत्यार्थ प्रकाश का यही एक विचार इतना क्रान्तिकारी है कि इसके क्रिया में आने से हमारी 90 प्रतिशत समस्यायें हल हो जाती हैं। इस ग्रंथ में हर पहलू पर ध्यान दिया गया है। इसे चौदह सम्मुल्लासों में वर्णित किया गया है। आईये। हम यह जानने का प्रयास करें कि कौन–सा सम्मुल्लास में क्या है? प्रथम सम्मुल्लास में ईश्वर के ओंकारादि नामों की व्याख्या है। परमेश्वर के प्रमुख गौणिक नामों के साथ प्रधान एवं निजनाम 'ओ3म्' को ही सर्वोत्तम् माना गया है। इस सम्मुल्लास को पढ़ने से ईश्वर के प्रति भ्रांति मिट जाती है और सच्चे ईश्वर की जानकारी हो जाती है।

सत्यार्थ प्रकाश–देश, धर्म, संस्कृति का रक्षक, क्रान्तिकारी ग्रंथ है, इसे जानें, समझें और अवश्य पढ़ें।

द्वितीय सम्मुल्लास – इसमें संतानों की शिक्षा के बारे में बतलाया गया है, साथ ही माता–पिता और आचार्य के महत्व को समझाया गया है। माता ही बच्चे की निर्माता है, उस पर बहुत ही सुन्दर विवेचन है।

तृतीय सम्मुल्लास –इसमें ब्रह्मचर्य, पठन–पाठन व्यवस्था, सत्यासत्य ग्रंथों के नाम, पढ़ने–पढ़ाने की रीति को विस्तार से समझाया गया है। यज्ञ की महता और सार्थकता तथा मानव मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार प्रमाण सहित दिया गया है।

चतुर्थ सम्मुल्लास –इसमें विवाह और गृहाश्रम का सुन्दर चित्रण है। विवाह का प्रयोजन और प्रकार एवं विवाह बंधन के साथ गृहस्थ के कर्तव्य कर्म को समझाते हुए पंच महायज्ञ की व्याख्या इसमें समाहित है। इसमें वर्ण व्यवस्था के बारे में बतलाया गया है।

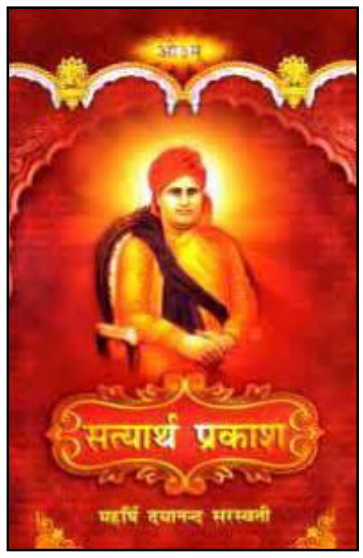

पंचम सम्मुल्लास– इसमें वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम का वर्णन है। संन्यासी की महत्ता और आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है। इसमें धर्म की व्याख्या है।

छठे सम्मुल्लास –इसमें राजधर्म का विस्तृत वर्णन है। राजा–राज्याधिकारी, प्रजा आदि के कर्तव्य कर्मों की व्याख्या समाहित की गई है।

सप्तम सम्मुल्लास –इसमें ईश्वर एक वेद के बारे में विस्तृत चर्चा की गई है। वेदों के बारे में जानने और ईश्वर को मानने की सुन्दर व्यवस्था इसमें है।

अष्टम सम्मुल्लास –इसमें जगत अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति स्थिति, प्रलय की चर्चा करते हुए भारत को ही आदि देश बतलाया गया है।

नवम् सम्मुल्लास –इसमें विद्या–अविद्या, मोक्ष आदि के बारे में बतलाया गया है। मुक्ति किसे कहते हैं और यह कैसे मिलती है इस पर व्यापक वर्णन है।

दशम् सम्मुल्लास –मनुष्य का आचार–विचार कैसा हो तथा आहार–अर्थात् भक्ष्याभक्ष्य के बारे में विस्तृत जानकारी है।

एकादश सम्मुल्लास –इसमें आर्यावर्तीय मतों पर व्यापक चर्चा है। नए–नए मंत्रों के प्रादुर्भाव से एंव मूर्ति पूजा से कैसे हानि होती है तथा आर्य अर्थात् वैदिक धर्म से विकाश का मार्ग प्रशस्त होता है, उन सभी बिन्दुओं पर इसमें चर्चा की गई है।

द्वादश सम्मुल्लास –इसमें नास्तिक मत चारवाक–बौद्ध–जैन मतों की समीक्षा है।

त्रोदश सम्मुल्लास –इसमें ईसाई मत की समीक्षा है।

चतुर्दश सम्मुल्लास –इसमें इस्लाम मत की समीक्षा है।

अतं में ''स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश'' लिखकर यह उद्घोष कर दिया कि ''मैं अपना मन्तव्य उसी को मानता हूं कि जो तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना या मत मतान्तर चलाने का लेश मात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु

महर्षि दयानन्द सरस्वती

जो सत्य है उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।'' आगे उन्होंने कहा कि ''मनुष्य उसी को कहना जो कि मननशील होकर स्वात्मवत अन्यों के सुख–दुःख और हानि–लाभ को समझे।

इतने अनूठे विचारों को लेकर के अमरग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश की रचना वेदोद्धारक, महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कर डाली। यह ग्रंथ 1875 ई0 में स्थापित ''आर्य समाज'' का प्राण हो गया। आर्य समाज ने इसके प्रचार के लिए काफी पुरूषार्थ किया। इसके नाम पर बड़े आन्दोलन हुए। इस ग्रंथ ने बर्तानिया हुकुमत की नींव हिला दी। इससे धर्म के ठेकेदारों का सिंहासन डगमगा गया। सत्य सिर चढ़ कर बोलने लगा। इसके बारे में आर्य समाज के दीवाने रक्त साक्षी पं0 लेखराम लिखते हैं कि ''मैंने सत्यार्थ प्रकाश को 18 बार पढ़ा है, जितनी बार पढ़ता हूं, हर बार कुछ नए रत्न प्राप्त होते हैं। सत्यार्थ प्रकाश एक हजार रू0 का भी होता तो मैं अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति बेचकर खरीदता। इसके बारे में लाला लाजपत राय ने कहा '' जब कोई उलझन आती है, तभी सत्यार्थ प्रकाश का पाठ करने से आसानी से सुलझा लेता हूं। रामप्रसाद बिस्मिल ने कहा ''मैंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा। इससे मेरे जीवन का तख्ता पलट गया। ''वीर साबरकर ने कहा ''हिन्दू जाति की ठण्डी रगों में उष्ण रक्त का संचार करने वाला सत्यार्थ प्रकाश अमर रहे यही मेरी कामना है। इसके विद्यमानता में विद्यर्मी अपने मजहब की शेरी नहीं मार सकता।

आइये समय की मांग है, राष्ट्र की पुकार है भारत का अद्भुत संत महर्षि दयानन्द सरस्वती का अनुपम ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश को पढ़े और पढ़ाये। जन–जन में पहुंचायें। जीवन के हर प्रश्न का उत्तर जानिये– दुःखों का कारण क्या है ? शान्ति कैसे प्राप्त हो सकती है ?यज्ञ से मानव–कल्याण कैसे सम्भव है? गृहस्थ जीवन के कर्तव्य क्या होते हैं? सन्तान का व्यक्तित्व और चरित्र निर्माण कैसे करें ? हमारी शिक्षा पद्धित कैसी हो ? राजनीति का सच्चा स्वरूप कैसा होना चाहिए? धर्म और विज्ञान एक–दूसरे के विरोधी है या सहयोगी? ईश्वर का स्वरूप और उसकी सच्ची पूजा, भक्ति क्या है? हमारे जीवन में सुख, शान्ति तथा समाज में सहृदयता कैसे आए? यह बस जाने और जीवन में धारण करने वाला ''विवेक'' प्राप्त करने के लिए, प्राचीन ऋषियों के सहस्रों ग्रन्थों का निवोड़ व क्रान्तिकारियों का प्रेरणास्त्रोत : ऋषि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' अवश्य पढ़ें।

–उपदेशक
उपमंत्री बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना–4

ऐसे होते हैं आर्य : आचार्य अरविन्द शास्त्री

ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी द्वारा प्रज्वलित चतुर्वेद पारायण यज्ञों की ज्योति को आगे बढ़ाने वाले उनके शिष्य आचार्य अरविन्द शास्त्री, वैदिक मोहन आश्रम (हरिद्वार) सुवाहेड़ी, झालू, बिजनौर मुलसम अन्धाड़ (बरनावा, बागपत), जलालाबाद (गाजियाबाद) केसेरुआ खुर्द, टिटोली (शामली), दान्दुपुर (मवाना, मेरठ) में प्रतिवर्ष ग्रामीणों के सहयोग से सामूहिक चतुर्वेद पारायण यज्ञ एक स्थान पर चार यजमानों से चारों वेदों के मंत्रों से परायण यज्ञ आठ दिन लगातार करते हुए सम्पन्न कराते हैं। इस प्रकार का यज्ञ कराने वाले ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के शिष्य, जो महानन्द गुरुकुल महाविद्यालय बरनावा (बागपत) उ0प्र0 में रहकर विद्याध्ययन करा रहे हैं। जिनका दूरभाष नं0 09411823200 है। इनके द्वारा माह जनवरी में सम्पन्न यज्ञ इस प्रकार हैं-

1 से 5 जनवरी तक ऋग्वेद पारायण यज्ञ ग्राम चूनसा (शामली) में रणधीर सिंह के निवास पर, यज्ञमान पदमसिंह सपत्नी।

एनइपीजैड स्टाफ क्वार्टर, फेस द्वितीय नोएडा के वेदपाल के निवास पर 23 से 25 जनवरी को अथर्ववेद पारायण यज्ञ। ग्राम जीवाना गुलियान (शामली) में मनीष आर्य के यहां स्वस्ति याग। 28 जनवरी से 3 फरवरी तक चतुर्वेद पारायण यज्ञ ग्राम सुवेहड़ी (बिजनौर) में सामूहिक यज्ञ समस्त ग्रामवासियों के सहयोग से किया जाएगा।

गाजर

गाजर प्राकृतिक ब्लड बैंक है इसका सेवन करने वाले कभी खून की कमी का शिकार नहीं हो सकते।

आयुर्वेदिक मत– मधुर विक्त रस–लघु तीक्षण स्निग्घ, गुण उर्ष्ण वीर्य एवं मधुर विपाक होता है। यह त्रिदोषशामक है। यह दीपन संग्राही व्रस्य ग्रहण होती है, रक्तपित्त अर्श संग्रहणी में लाभ करती है।

आधुनिक मत – इसके मूल में कैरोटिन, हाईड्रोकैरोटिन, शर्करा, स्टार्च, पैक्टिन, मौलिक ऐसिड, लिगनिन, अलब्युमिन लवण तथा एक उड़न शील तेल पाया जाता है। इसमें आयरन पर्याप्त मात्रा में होता है। गाजर रस से अनेकों लवण और विटामिन ए0, बी0, सी0, डी0, ई0, जी0 तथा के0 मिलते हैं।

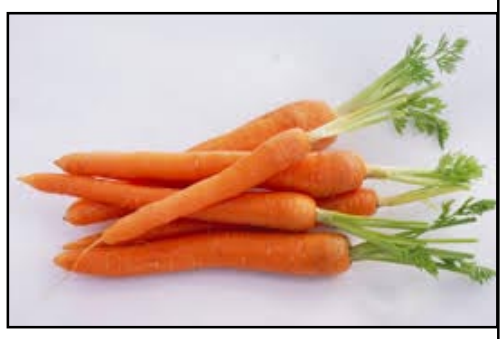

गाजर के सेवन से–

1. शरीर मुलायम और सुन्दर बनता है।
2. शरीर की त्वचा एवं नेत्र स्वस्थ्य बने रहते हैं।
3. इसके नियमित सेवन से नेत्र ज्योति बढ़ती है।
4. मानसिक शारीरिक तथा स्नायु शक्ति प्राप्त होती है।
5. बौद्धिक विकास के लिए गाजर लाभदायक है।
6. रोगों के आक्रमण से व्यक्ति सुरक्षित रहता है।
7. शरीर में शक्ति का संचार होता है।
8. गाजर का सेवन सौन्दर्य बढ़ाता है।
9. गहरी नींद आती है पौरूष कमजोरी दूर होती है।
10. गाजर पेट, कब्ज को दूर करती है।

हरिश्चन्द्र आर्य
प्रचार कार्यालय– उपदेश विभाग, अमरोहा (उ.प्र.)

मिलावटी दवाईयां और हम

किसी बीमार या घायल व्यक्ति को यदि कोई स्वस्थ्य कर सकता है, तो वह भगवान के बाद चिकित्सक ही है। यही कारण है कि चिकित्सक को भगवान का दर्जा दिया गया है। चिकित्सक अपना आराम और खाना–पीना छोड़कर अपनें पीड़ित व्यक्ति की दवा करता है ऐसा करने से जहाँ चिकित्सक को आत्मिक संतुष्टि मिलती है, वहीं समाजसेवा के कारण उसे आर्थिक लाभ भी हो जाता है। यहाँ तक तो सब कुछ ठीक है, लेकिन आज इस पेशे में कुछ व्यवसायिक लोग जुड़ गये हैं, जिनका मकसद सिफ और सिर्फ अधिक से अधिक धन कमाना रह गया है। ऐसे लोग रातोरात अथाह सम्पत्ति के मालिक बन जाते हैं, उन्हें न तो मरीज से मतलब है और न ही उसकी बीमारी से। इसमें कोई दो राय नहीं है कि प्रत्येक मनुष्य जब नौकरी या अपना व्यवसाय आरम्भ करता है तो उस समय उसके पीछे जीवन यापन की भावना रहती है। पहला लक्ष्य यही होता है कि किसी तरह दो वक्त की रोटी आराम से मिले जब यह मिलने लगती है तो अन्य जरूरतें पूरी करने के लिए भी प्रयास किया जाता है। जब धीरे–धीरे इसकी पूर्ति होने लगती है तो वह अपनी जरूरतों को इतना बढ़ा लेता है कि उन्हें व्यवासय या नौकरी के जरिये पूरी नहीं कर पाता। यही स्थिति मनुष्य को अतिरिक्त कमाई के लिए बाध्य करती है। जिसे पूरा करने के लिए वह अच्छे बुरे का भेद भूल जाता है और वह साम, दाम, दंड, भेद की नीति पर चलते हुए सिकी भी तरह से ध न कमाने और इकट्ठा करने की लालसा में लग जाता है। आज खाद्य पदार्थो साहित अन्य चीजों में मिलावट का दौर चल रहा है। जहॉ सब कुछ मिलावटी ही दिखाई दे रहा है, आटा, दाल, चावल से लेकर मिर्च मसाले तक में मिलावट है। जिससे स्वास्थ्य खराब होता है। स्वास्थ्य को बचाने के लिए दवाईयों की जरूरत पड़ती है मगर स्वार्थ की बेड़ियों में जकड़ चुके मनुष्य ने इनमें भी मिलावट करना शुरू कर दिया है।

जिससे जीवन रक्षक दवाईयों से भी अब मनुष्य को अपना जीवन बचने की उम्मीद नहीं रही है। जिस तरह से आदमी बुरे काम करने से गुरेज नहीं कर रहा है उसी तरह नकली दवाईयों का कारोबार शहरी और कस्बाई क्षेत्रों में फैल रहा है। जहाँ प्रशासनिक अधिकारियों की पहुँच नहीं होती परन्तु जहाँ अन्य वस्तुओं की कीमत को चुकाने में आम आदमी को मेहनत करनी पड़ती है वहीं नकली दवाई के सेवन से किसी की जान जा सकती है। इस समय आम आदमी को जीवन बचाने में दवाई का सहारा लेना पड़ता है। परन्तु बदकिस्मती यही है कि महंगी से मंहगी दवाईयां खाने के बाद भी उसे स्वास्थ्यम लाभ हांसिल नहीं होता।

लो ब्लड प्रेशर के लिए घरेलू नुस्खे

1. 50 ग्राम देशी चने व 10 ग्राम किशमिश को रात मं 100 ग्राम पानी में किसी भी कांच के बर्तन में रख दें। सुबह चनों को किशमिश के साथ अच्छी तरह से चबा–चबाकर खाएं और पानी को पी लें। यदि देशी चने न मिल पाये तो सिर्फ किशमिश ही लें। इस विधि से कुछ ही सप्ताह में ब्लेड प्रेशर सामान्य हो जायेगा।
2. रात को बादाम की 3–4 गिरी पानी में भिगों दें और सुबह उनका छिलका उतार कर 15 ग्राम मक्खन और मिश्री के साथ मिलाकर बादाम–गिरी को खाने से लो ब्लड प्रेशन नष्ट होता है।
3. प्रतिदिन आंवले या सेब के मुरब्बे का सेवन लो ब्लड प्रेशर में बहुत उपयोगी होता है। आंवले के 2 ग्राम रस में 10 ग्राम शहद मिलाकर कुछ दिन प्रातःकाल सेवन करने से लो ब्लड प्रेशर दूर करने में मद्द मिलती है।
4. लो ब्लड प्रेशर को सामान्य बनाये रखने में चुकंदर रस काफी कारगर होता है। रोजाना यह जूस सुबह–शाम पीना चाहिए। इससे हफ्ते में आप अपने ब्लड प्रेशर में सुधार पाएगें।

5. जटामानसी, कपूर और दाल चीनी को समान मात्रा में लेकर मिश्रण बना लें और तीन–तीन ग्राम की मात्रा में सुबह शाम गर्म पानी से सेवन करें। कुछ ही दिन में आपके ब्लड प्रेशर में सुधार हो जायेगा।
6. जिस को लो बी0पी0 की शिकायत हो और अक्सर चक्कर आते हों तो आवलें के रस में शहद मिलाकर चाटने से जल्दी आराम मिलता है। रात्रि में 2 – 3 छुहारे दूध में उबालकर पीने या खजूर खाकर दूध पीते रहने से निम्न रक्तचाप में सुधार होता है।
7. अदरक के बारीक कटे हुए टुकड़ों में नींबू का रस व सेंधा नमक मिलाकर रख लें। इसे भोजन से पहले थोड़ी–थोड़ी मात्रा में दिन में कई बार खाते रहने से यह रोग दूर होता है। 200 ग्राम मटठे में नकर, भुना हुआ जीरा व थोडी सी भुनी हुई हींग मिलाकर प्रतिदिन पीते रहने से इस समस्या के निदान में पर्याप्त मदद मिलती है।
8. 200 ग्राम टमाटर के रस में थोड़ी सी काली मिर्च व नमक मिलाकर पीना लाभदायक होता है। उच्च रक्तचाप में जहां नमक के सेवन से रोगी कोा हानि होती है, वहीं निम्न रक्तचाप के रोगियों को नमक के सेवन से लाभ होता है।
9. गाजर के 200 ग्राम रस में पालक का 50 ग्राम रस मिलाकर पीना भी निम्न रक्तचाप के रोगियों के लिए लाभदायक रहता है।
10. निंबू को पानी के साथ या सलाद आदि के साथ रोज खाने से इस समस्या से राहत मिलती है।

लहसुन निम्न रक्तचाप के रोगियों के लिए बहुत ही लाभदायक होता है इसका नियमित सेवन करने से भी लोग ब्लड प्रेशर की समस्या में आराम होता है।

समझों बेटी की कीमत

इशरत अली

हमारे समाज में बेटी का जन्म होना शर्म और दुख की बात मानी जाती है। जब बेटियां बड़ी होती हैं तो उन्हें दायरे में रहने की नसीहत दी जाती है। यह सब दूर होना आवश्यक है। समाज में पिता अपने बेटे के नाम से जाना जाता है परन्तु बहादुर पिता अपनी बेटी के नाम से जाने जाते हैं। जब पाकिस्तान में तालिबान का कहर था बच्चियों के पढ़ने पर पाबंदी थी तब होशियार लड़कियों ने पढ़ाई जारी रखी थी तथा सबको भी तालीम हासिल करने की प्रेरणा दी। हम चाहें तो अपनी बेटियों का जीवन बदल सकते हैं। हम विश्व में परेशानी झेल रही महिलाओं का दर्द मिटा सकते हैं। इसके लिए पुरुष व महिलाओं को पुरानी सोच से बाहर निकलना पड़ेगा। हमें हिम्मत दिखाकर महिलाओं के हक़ को मानवाधिकार के रूप में देखना होगा और बेटियों व महिलाओं की कीमत समझनी पड़ेगी। केवल सशक्तिकरण की बातें करने से काम नहीं चलेगा।

तेरा हम पर महाशिवरात्रि है अहसान बड़ा

वीरेन्द्र कुमार राजपूत

तोड़ तूने दिया ऋषिराज का भ्रम-जाल घना,
तेरा हम पर महाशिवरात्रि है अहसान बड़ा।।
निज पिता में बड़ा विश्वास रहा बचपन में,
ईश-भक्ति के वह आदर्श रहे थे मन में,
पिता की भांति ही शिव-मूर्ति थी भगवान उन्हें,
हो के फिरभी, रही समर्थ, शक्तिमान उन्हें।
भक्त को रक्षती, करती तथा कल्याण महा,
तेरे कारण उन्हें विश्वास में व्यवधान पड़ा।।
तेरे कारण जगे ऋषिराज जी शिव-मन्दिर थे,
जबकि सब भक्त सो गये, हुए कुछ तन्द्रित थे,
एक चूहा वहां शिव-लिंग पे चढ़ने आया,
तथा बेबस बना शिव कुछ नहीं करने पाया।
पिता वचन, कि जो पत्थर पड़ी लकीर रहा,
तेरे कारन ही वह अब हो गया अज्ञान जड़ा।।
तर्क-बुद्धि रखे, चिन्तन-प्रधान ऋषि-वर थे,
अतर्क धारणाएं पास नहीं थे धरते,
पिता से कर चले तत्काल बड़ी जिज्ञासा,
किन्तु हो पाये ना संतुष्ट, मन रहा प्यासा।
अब तो शिव-रात्रि का उपवास व्यर्थ जान पड़ा,
तुझसे शिवरात्रि उन्हें सत्य का खुमार चढ़ा।।
तेरे कारण, अरे शिवरात्रि, उन्हें ज्ञान मिला,
तेरे कारन ही उन्हें वेद का रसपान मिला,
मेटने के लिये अन्याय को, अवदान मिला,
तेरे कारन ही उन्हें मोक्ष का सोपान मिला।
देश औ, जाति, धर्म, कर दिया सिर तान खड़ा,
बल भुजाओं का बढ़ा, व्यक्ति कर्मवान बना।।
सच्चा शिव रूप मगर, आज शिथिल लगता है,
बढ़ निशा-अन्ध, ज्ञान-भानु को निगलता है,
फिर से शिव-रात्रि तू ऋषिराज का अभियान बढ़ा,
फिर से भारत को तू शिवरूप की पहचान करा।
फिर से जन-जन के मुखों से यही गुण-गान करा,
तेरा हम पर महाशिवरात्रि है अहसान बड़ा।

-सौरभ सदन, 8 वसन्त कुंज, 369/1
वसन्त विहार, फेज-1, देहरादून-२48006

ये आजादी लहू से सींची है हमने

(स्वतंत्रता सेनानी के हृदयोदगार)

ओ रंगरेजाद रंग अनोख रंग देना।
मेरे अंत कफन को, रंग बसंती रंग देना।
हिन्दु मुस्लिम, सिख, इसाई आपस में सब भाई-भाई।
मेरे कफन के कोने पर पहचान हमारी लिख देना।
मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर और गुरूहरि।
सब में ईश्वर एक है, ईमान हमारा लिख देना।
एक छोर पर शिखर हिमालय।
दूजे पर सागर लिख देना।
हरी-भरी हो, धरती माता।
गंगा जल, निर्मल लिख देना।
उत्तर में केशर, कश्मीर हमारा।
दक्खिन में, शिव सोमेश्वर लिख देना।
एक कोने पर गांधी, नेहरू और सुभाष।
चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह लिख देना।
भूल न जाना रामकृष्ण को।
विवेकानन्द और स्वामी दयानन्द लिख देना।
एक ईश्वर का हूं मैं उपासक।
ये विश्वास हमारा लिख देना।
पड़ी लड़ाई अंग्रेजों से, गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी हूं।
सिपाही चन्द्रशेखर का, निशान हमारा लिख देना।
सर झुका नहीं, पग रूका नहीं।
इन्कलाब जिन्दाबाद, तार-तार में लिख देना।
जन्मभूमि है कैलबकरी, डालचन्द कहलाता हूं।
इस धूलि के कण-कण को प्रणाम हमारा लिख देना।
मध्य कफन पर सुन्दर-सुन्दर।
भारत मां के चरणों में, बलिदान हमारा लिख देना।
अवसान निकट है, अब जीवन का।
ये फरमान प्रभु का लिख देना।
ये आजादी लहू से सींची है हमने।
कहीं तुम पानी से मत लिख देना।।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी-
डालचन्द सिंह यादव पुत्र स्व. श्री झब्बरसिंह यादव
निवासी- कैलबकरी, जनपद-जे.पी.नगर।

पृष्ठ 7 का शेष : ओह! शिवजी के डमरू...

तात्पर्य हुआ परमेश्वर ब्रह्माण्ड के सूर्य, चाँद, अग्नि, विद्युत् आदि दिग्दिगन्त के पदार्थों का, इन पदार्थों की आधार सभी दिशाओं का आधार है। पिण्ड के चक्षुरादि इन्द्रियों, प्राणों आदि का आधार परमेश्वर ही है। आध ाारों के आधार परमेश्वर का अध िाक व्याख्यान करना असम्भव है। उसका व्याख्यान तो बस नेति नेति शब्दों में ही हो सकता है। परमात्म तत्त्व की यही विवेचना ऋषि याज्ञवल्क्य ने राजा रजक को बृहदारण्यक उपनिषद् के ४/४/२२ प्रकरण में भी समझाई है– स एष नेति नेत्यात्माघृह्यः. .....।

इस प्रकार निष्कर्ष हुआ परमेश्वर अनन्त है, प्रति पदार्थ में समाहित है, सबमें व्याप्त है। इस अनन्तता के कारण परमेश्वर के अनेक नाम, अनेक संज्ञायें हैं। उन अनेक संज्ञाओं में ओ३म्, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, काल आदि उसी की संज्ञायें हैं। भव, शंकर, शम्भु, पिनाकी, शूलपाणी, महेश्वर, महादेव, स्थाणु, विशालाक्ष, श्यम्बक आदि भी ईश्वर की ही संज्ञायें हैं और वे सभी संज्ञायें गौणिक हैं। उनमें एक संज्ञा शिव भी है। सर्व कल्याणकारी होने से परमेश्वर शिव है। मुख्य नाम ईश्वर का ओ३म् है। उस शिव परमेश्वर की कोई आकृति नहीं है। परमेश्वर की कोई आकृति बनाना, प्रस्थर के किसी भी आकार को परमेश्वर बताना यथार्थ नहीं है, अज्ञान मात्र है। शिवरात्रि पर्व पर महर्षि दयानन्द का सभी को संदेश है कि अज्ञान से बचें, निराकार, व्यापक ईश्वर को उपास्य मानें।

–: सन्दर्भ :–

१. पाठान्तर– समुद्रवद् व्याकरणं महेश्वरे ततोम्बुकुम्भोद्भरणं बृहस्पतौ। तदभागभागाच्च शतं पुरन्दरे कुशाग्रबिन्दुग्रथितं हि पाणिनौ।।पुरुषोत्तम देव भाष्य• भाष्यव्या• टीका।।
2. गुरुपर्वक्रमात्मकश्च सम्बन्धो यथेहैव कैश्चिदुक्तः– ब्रह्मा महेश्वरो वा मीमांसां प्रजापतये प्रोवाच। प्रजापतिरिन्द्राय इन्द्र आदित्यायेत्येवमादि। सुचरित मिश्र, मीमां• श्लोक वार्तिक, काशिका टीका।।
3. पाठान्तर– समुद्रवद् व्याकरणं महेश्वरे ततोम्बुकुम्भोद्भरणं बृहस्पतौ। तदभागभागाच्च शतं पुरन्दरे कुशाग्रबिन्दुग्रथितं हि पाणिनौ।।पुरुषोत्तम देव भाष्य• भाष्यव्या• टीका।।
4. गुरुपर्वक्रमात्मकश्च सम्बन्धो यथेहैव कैश्चिदुक्तः– ब्रह्मा महेश्वरो वा मीमांसां प्रजापतये प्रोवाच। प्रजापतिरिन्द्राय इन्द्र आदित्यायेत्येवमादि। सुचरित मिश्र, मीमां• श्लोक वार्तिक, काशिका टीका।।
5. हेमचन्द्र• अभिधा• चिन्ता• कोष, शेष कोषकार।

प्राचार्या– पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी–१०

मन-नमन

देवातिथि देवनारायण भारद्वाज

ना भटको मन ना भटकाओ।
मन मेरी ओर लौट आओ।।
पथ में किंचित अवरोध पड़ा।
या हुआ कहीं गतिरोध खड़ा।
आशा गयी निराशा आयी,
तो फिरता मन उखड़ा-उखड़ा।
ना उखड़ो मन ना उखड़ाओ।
मन मेरी ओर लौट आओ।।1।।
मन फिर से तुम कर्मण्य बनो।
बल विद्या युत श्रुति गम्य बनो।
दीक्षा और दक्षता पाकर,
जीवन्त और ध्रुव धन्य बनो।
ना जकड़ो मन ना जकड़ाओ।
मन मेरी ओर लौट आओ।।२।।
तुम यहां लौट कर आओगे।
फिर ज्योतिर्मय हो जाओगे।
इस चिरंजीव संजीवन में,
नित सूर्य सुभग चमकाओगे।
मन मनन-नमन लेकर आओ।
मन मेरी ओर लौट आओ।।3।।

स्रोत : आ त एतु मनः पुनः क्रत्वे दक्षाय जीवसे।
ज्योक् च सूर्य दृशेा।। ऋ0 10.57.4।।
वरेण्यम्, अवन्तिका-।, अलीगढ़

स्वतंत्रता सेनानी रामप्रसाद वर्मा : स्मरणीय व्यक्तित्व

एटा जनपद की तहसील जलेसर में सिकन्दराराऊ रोड पर पहला गांव सराय राजनगर (पत्थर की सराय) यहीं के निवासी रामसिंह लोधी के पुत्र रामप्रसाद वर्मा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। इनके संगी-साथी व आसपास के गांव के लोग उन्हें गुरुजी के नाम से पुकारते थे, युवावस्था से ही देश की पराधीनता से आहत होकर कुछ करने की ललक थी, जिसकी प्रेरणा आधार महर्षि दयानन्द सरस्वती के सत्यार्थ प्रकाश की ''विदेशी राजा कितना ही अच्छा क्यों न हो, किंतु स्वदेशी राजा के बराबर कभी नहीं हो सकता'' पंक्तियां थीं। हृदय में थी वीरांगना अवन्तीबाई की बलदानी संस्कृति। महात्मा गांधी का आह्वान मिला। साथ में कांग्रेस का मंच तो देश के लिए कुछ करने की तमन्ना और अधिक बलवती हो गयी। आस-पास के क्षेत्र में शिक्षा के प्रसार-प्रसार पर जोर देने के कारण लोग उन्हें गुरुजी कहने लगे। उन्होंने संसाधन तथा सहयोगाभाव में अपने

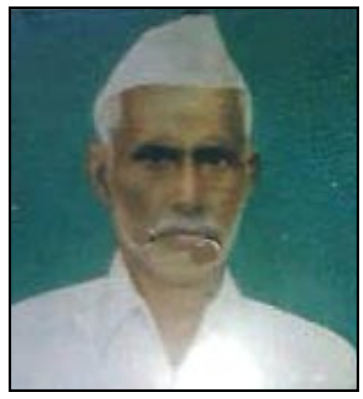

कच्चे आवास को ही विद्यालय बना डाला। कोई फीस नहीं, कलम-दवात, खड़िया, स्याही, किताब सब कुछ अपने दम पर। छः माह की जेल अजमेर में काटी, रेलकर्मी पिता के रिटायर्ड होने और जेल समाप्ति के उपरांत सराय राजनगर गांव लौटे, तो सारी जमा पूंजी असहाय, गरीबों व खेतिहर मजदूरों की व्यवस्था में ही वितरित कर दी। होली, दीपावली, रक्षाबन्धन, गांधी जयन्ती, २6 जनवरी, और 15 अगस्त को विद्यालय में ही हर पर्व पर तथा गांव में अन्य चार-पांच घरों में यज्ञ, हवन जरूर करना-करवाना एक शौक था। पढ़ाने के लिए बच्चों को उनके घरों पर जाकर ले आना और निःशुल्क पढ़ाना एक जुनून था। महात्मा गांधी की मृत्यु का समाचार सुना, तो भोजन ही त्याग दिया। चौकी पर अलार्म घड़ी रख दी गयी। धोती ही पहनना और धोती को ही ओढ़ना शुरु कर दिया। पांचवें दिन गांव की महिलाएं एकत्रित होकर आयीं और बोलीं कि बड़े जी (जेठ जी) जब हमने चरखा चलाना शुरु कर दिया है, तो अब आप भी भोजन कर लो। तब इस स्वतंत्रता सेनानी ने भोजन किया था।

1977 में गांव में घर पर ही इनकी मृत्यु हुई। तिरंगे के साथ ही श्मशान तक एक लम्बा जुलूस निकाला गया। इनकी मृत्यु के बाद ही गांव में विद्यालय स्थापित किया गया, जिसका प्रवेशद्वार लोहे के फाटक इस सेनानी के नाम पर ही उनकी एकमात्र पुत्री स्व0 भगवान देवी (जीजी) ने बनवाया था।

15 अगस्त 1972 के दिल्ली में पूर्व प्रधानमंत्री स्व0 श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा प्रदत्त ताम्रपत्र का बैंत एटा लोधीपुरम निवासी श्री केशवसिंह वर्मा, पूर्व ए0डी0ओ0 के पास सुरक्षित है, जो कि इस सेनानी के दामाद हैं। उनकी शिक्षा प्रचार की इच्छा को तो उनके धेवते विक्रम सिंह वर्मा अध्यापक के रूप में पूरी कर रहे हैं तथा आर्यसमाज एवं संस्कृति रक्षा का भार उनके बड़े धेवते प्रताप सिंह वर्मा (ग्रामीण बैंक प्रबन्धक) आर्य समाज एटा के सहयोग से निभा रहे हैं।

सुरेश चन्द्र शास्त्री/
प्रताप सिंह वर्मा
-सदस्य आर्यसमाज, एटा

ये है महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म कक्ष - केसरी।

ये है टंकारा (राजकोट) गुजरात स्थित युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वती का जन्म स्थल, जिसे टंकारा ट्रस्ट ने जीर्णोद्धार कर भव्य रूप प्रदान किया

ऋषि जन्म स्थल के मुख्य द्वार पर उड़ीसा के आर्यजन- केसरी।

संबोधित करते आर्यसमाज टंकारा के मंत्री हसमुख भाई परमार

टंकारा के आर्यवीर दल के युवा सदस्यगण- केसरी।

आर्यसमाज परिसर टंकारा में आयोजित ऋषि बोधोत्सव में उपस्थित श्रद्धालु भजनामृत का पान करते हुए- केसरी।

हमारे नये आजीवन सदस्य

हर्षवर्धन प्रकाश
गढ़वा (झारखण्ड)

आर्यावर्त केसरी के आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि 'आर्यावर्त केसरी' के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 30404724002 अथवा सिंडीकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 88222200014649 में सीधे जमा करा सकते हैं, जिसकी सूचना अपने पासपोर्ट साइज़ फोटो, नाम, पते व चलभाष सहित अविलम्ब हमें भेज दें। सहयोग राशि एकाउन्टपेयी चैक या धनादेश द्वारा भी भेजी जा सकती है। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी,
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.),
दूर.-05922-262033, चल.- 09758833783 / 08273236003

आइये! आज ही आर्यावर्त केसरी के मिशन से जुड़िए...

धूमधाम से मनाया वार्षिकोत्सव

स्वाहेड़ी (बिजनौर), घसीटा सिंह आर्य (हितैषी)। आर्यसमाज स्वाहेड़ी का 33वां वर्षिकोत्सव 28 जनवरी से 3 फरवरी तक बड़े हर्षोल्लास से राष्ट्रकल्याण एवं प्रदूषण उन्मूलन हेतु 'चतुर्वेद पारायण महायज्ञ' एवं 'बेटी बचाओ अभियान' के द्वारा मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा अरविन्द शास्त्री योगाचार्य, महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा थे। इस अवसर पर नवीन राणा, एमडी, सिद्धांत विल्डकोण प्रा0लि0, स्वामी ओमवेश पूर्व राज्यमंत्री, ज्ञानवीर सिंह, स्वामी सूर्यवेश, स्वामी सत्यवेश, स्वामी ब्रह्ममुनि, स्वामी आर्यवेश, विमल कुमार एडवोकेट, लखनऊ, आचार्य प्रियंवदा वेदभारती, आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी के साथ ही भारी संख्या में संन्यासी एवं विद्वत्जनों ने भाग लिया।

आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा द्वारा स्थापित
सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि के सहयोगी महानुभाव

डॉ. राममुनि
प्रधान

रमेश सिंह एडवोकेट
मंत्री

विनोद कुमार गुप्ता
कोषाध्यक्ष

उर्मिला आर्या
आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर
१०००/- रुपये

आर्य समाज (गंज) स्टेशन रोड, मुरादाबाद (उ.प्र.)
राशि- ३१००/- रुपये

घर-घर पहुंचाएं सत्यार्थ प्रकाश
धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं है, यदि आप चाहें तो यह राशि इस ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी हमें भेज सकते हैं। आपकी घोषित धनराशि के अनुरूप उतनी ही प्रतियों में आपके चित्र व नाम प्रकाशित किये जाएंगे। धन्यवाद

: विशेष :
प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' तथा आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित किये जाएंगे

हकीम सैयद हुसैन नक़वी

अलबारी दवाखाना

क्या आप इनमें से किसी भयंकर रोग से पीड़ित हैं, तुरंत संपर्क करें

विशेषज्ञ :-
गुर्दा, केंसर, गुप्त रोग एवं हृदय

नोट :- मस्तिष्क केंसर रोगी न मिलें

पता :- मोहल्ला लकड़ा, निकट सब्जी मंडी, अमरोहा-244221
मोबा. नं०- 09917358382

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक',
विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र,
यतीन्द्र विद्यालंकार, रवित विश्नोई,
डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी,
इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033,
9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com